श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः

श्रीगौड़ीय-गीतिगुच्छ

(हिन्दी संस्करण)

अनुवादक एवं सम्पादक

त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण महाराज

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति

श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ

मथुरा (उ० प्र०)

श्रीश्रीगुरु-गौरांगौ जयतः

श्रीगौड़ीय-गीतिगुच्छ

[महाजन पदावली संग्रह]

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति एवं तदन्तर्गत भारतव्यापी श्रीगौड़ीय मठों के प्रतिष्ठाता, श्रीकृष्णचैतन्याम्नाय दशमाधस्तनवर श्रीगौड़ीयाचार्य-केशरी ॐविष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री

श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी चरण के

अनुगृहीत

त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण महाराज

द्वारा

अनुदित एवं सम्पादित

सर्वाधिकार सुरक्षित]

[भिक्षा 2-50

प्रकाशक :

ओम्प्रकाश बृजवासी, एम. ए., एल. एल. बी., साहित्यरत्न
श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा (उ० प्र०)

प्रथम संस्करण :

श्रीश्रीलभक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी चरण की
आविर्भाव तिथि, माघ कृष्णा तृतीया
सम्वत् 2040, सन् 1984

प्राप्ति स्थान :

1. श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, कंसटीला, मथुरा (उ० प्र०)
2. श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ, तेघरीपाड़ा, नवद्वीप, जिला नदिया (प० बं०)
3. श्रीउद्धारण गौड़ीय मठ, चौमाथा, चूचुड़ा, हुगली (पं० बगाल)
4. श्रीनीलाचल गौड़ीय मठ, स्वर्गद्वार, पुरी (उड़ीसा)
5. श्रीविनोदबिहारी गौड़ीय मठ, 28, हलदार बागानलेन, कलकत्ता-4
6. श्रीकेशव गोस्वामी गौड़ीय मठ, शिलीगुड़ी, दार्जिलिंग (पं० बंगाल)

मुद्रक :

मातृभूमि प्रिन्टिंग प्रेस
चौड़ा रास्ता, जयपुर

प्रस्तावना

श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके प्रतिष्ठाता एवं आचार्य नित्यलीला प्रविष्ट ॐविष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री-श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज की अहैतुकी अनुकम्पासे उन्हींके प्रीति-विधानके लिये उन्हींके द्वारा बंगला-भाषामें प्रकाशित "श्रीगौड़ीय गीतिगुच्छ" का यह संक्षिप्त हिन्दी सस्करण प्रकाशित हो रहा है। श्रीभगवन्नाम, रूप, गुण और लीलाके श्रवण, कीर्तन और स्मरण द्वारा ही भगवत्प्राप्ति होती है; विशेषतः कलि-युगमें श्रीहरिनाम-संकीर्तन द्वारा ही सर्वार्थकी सिद्धि होती है—सभी शास्त्रों ने एक स्वरसे ऐसी घोषणा की है। श्रीकृष्ण संकीर्तनके मूल प्रवर्तक कलियुग पावनावतारी स्वयं-भगवान् श्रीचैतन्य महाप्रभुजीने, कीर्तनीयः सदा हरिः'—इस मंत्रमें सर्व साधारणको दीक्षित होनेका उपदेश दिया है। श्रीमद्भागवतमें भी 'कलौ तद्धरिकीर्तनात्' आदि द्वारा कलियुगके लिये केवल 'हरिकीर्तन' को ही सर्वोपरि परमार्थप्रद बतलाया गया है।

प्रस्तुत श्रीगौड़ीय गीति-गुच्छमें महाजनों के रचित एवं गाये गये कीर्तन-पदोंको ही गुम्फित किया गया है। इसमें भक्त-कवि समाजमें परम प्रसिद्ध श्रीलजयदेव गोस्वामी, श्रीविद्यापति, श्रीचंडीदास, श्रीलरूप गोस्वामी, श्रीलरघुनाथदास गोस्वामी, श्रीलनरोत्तम ठाकुर, श्रीलगोविन्ददास, श्रीलभक्तिविनोद ठाकुर एवं श्रीलभक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी प्रभृति श्रीगौड़ीय वैष्णवोंके अतिरिक्त श्रीसूरदास, मीराबाई, श्रीन्यासदास जैसे अन्यान्य भक्त कवियोंके भी कीर्तनपद संग्रहीत हैं। इनमें से कोई भी प्राकृत कवि नहीं है। अतएव इनके पदोंकी तुलना अर्वा चीन ग्राम्य पदकर्त्ताओंके पदोंसे नहीं करनी चाहिए। इन दोनोंको एक समान समझना भारी भूल है।

श्रीहरिकीर्तन और बैठकी गाना-बजानारूप मनोरञ्जनमें आकाश-पातालका अन्तर है। इसको भलीभाँति समझ लेना चाहिए।

हमारे परमाराध्य श्री श्रीलगुरुदेव नित्यलीलाप्रविष्ट ॐविष्णुपाद 108 श्रीश्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजने सन 1957 ई. में श्रीगौड़ीय गीतिगुच्छका बंगलाभाषामें प्रथम संस्करण प्रकाशित किया था। उनके अप्रकटलीलाविष्कारके पश्चात समिति के वर्तमान सभापति एवं आचार्य त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त वामन महाराजजीने इसके बहुतसे संस्करण प्रकाशित किये हैं। अब उन्हीं की प्रेरणा और उत्साह-दानसे, प्रेरित होकर तथा हिन्दी भाषी गौड़ीय वैष्णवोंके पुनः पुनः अनुरोध से यह संक्षिप्त हिन्दी-संस्करण प्रस्तुत किया गया है।

हिन्दी और बंगला में विशेष अन्तर नहीं है। बंगला-पदों के अर्थ सरल-सुगम हैं। फिर भी बंगला-पदोंके आवश्यक शब्दों का अर्थ पदोंके नीचे दिये गये हैं। संस्कृत पदोंका भावार्थ भी उनके नीचे दिया गया है।

इसकी पाण्डुलिपि प्रस्तुत करने तथा प्रूफ-संशोधन आदि कार्योंमें त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त पद्मनाभ महाराज और श्रीमान् ओमप्रकाश ब्रजवासी एम. ए., एल.एल. बी., साहित्यरत्न की सेवा-प्रचेष्टा प्रशंसनीय है।

परमार्थ प्राप्तिके इच्छुक श्रद्धालुजन इसका पाठ और कीर्तन कर परमार्थ-पथ पर अग्रसर हों—यही प्रार्थना है।

परमाराध्यतम
श्रीश्रीलगुरुपादपद्मकी
आविर्भाव तिथि
माघी कृष्णा तृतीया
रविवार, संवत २०४०
(१९ फरवरी, १९८४ ई०)

श्रीगुरुवैष्णवकृपालेश-प्रार्थी
श्रीभक्तिवेदान्त नारायण
श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ
मथुरा (उ० प्र०)

गीत-सूची

(वर्णानुक्रमिक)

पद्य	पृष्ठाङ्क
अच्युतं केशवं राम नारायणं	३८
अब तो हरिनाम लौ लागी	३६
आज हरि आये	५०
आलो म्हांने लागे वृन्दावन नीको	३७
ओहे वैष्णव ठाकुर दयार सागर	१३
एइबार करुणा कर वैष्णव गोसांइ	१४
कबे गौर बने सुर धुनी तटे	२०
कि रूपे पाइब सेवा	१५
गुरुचरण कमल	३२
गुरुदेव कृपा बिन्दु दिया	११
गौरांगेर दुटी पद	१६
गौरांग बलिते हवे पुलक शरीर	१७
कृष्ण हइते चतुर्मुख	७
छांड़ि मन हरि विमुखन को सङ्ग	३८
जय जय गुरुदेव	४३
जय ध्वनि	६
जयति जयति नामानन्द	७
जय राधे जय कृष्ण	२७
जय जय राधे	२८

जे आनिल प्रेमधन १८
जय राधा माधव २६
जय शचीनन्दन ३२
जय माधव मदन मुरारी ३३
जय गोविन्द जय गोपाल ३५
जय मोर मुकुट ३८
जय राधे जय राधे राधे ४१
जय जय गोराचाँदेर ४५
जय जय राधाकृष्ण ४५
जय जय राधाजी को ४६

ठाकुर वैष्णव पद १३

तातल सैकते वारि बिन्दु सम २२

देव ! भवन्तं वन्दे ६१

धनमोर नित्यानन्द १६

नमामीश्वर सच्चिदानन्द रूप ६८
नमो नमः तुलसी कृष्ण प्रेयसी ४७
नमो नमः तुलसी कृष्ण प्रेयसी (हिन्दी) ४८
नामश्रेष्टं मनुमपि ७
निताई पद कमल १५
निशिदिन बरसत नैन हमारे २६

प्रलयपयोधिजले ५३
पंच तत्व ३२
पार करेंगे नैया रे ३५

बसो मेरे नयनन में नन्दलाल ३५

भजहुँ रे मन श्रीनन्दनन्दन २३
भज गोबिन्द भज गोबिन्द ३४
भज भकत वत्सल गौर हरि ४८

मङ्गलाचरण १
मदन गोपाल शरण ३६
मधुकर रञ्जित मालति मण्डित ५७
मधुकर श्याम ३८
मगल श्रीगुरु गौर (मंगलारति) ४४
महाप्रसादे गोबिन्दे नाम ५०
मुनीन्द्र वृन्दवन्दिते त्रिलोक शोकहारिणी ६१

यशोमती नन्दन, व्रजवर नागर २८

राधा कुण्ड तट ३०
राधा कृष्ण प्राण मोर २१
राधा भजने यदि २४
राधा कृष्ण सेवों ३१
राधे ! जय जय माधव दयिते ६०
विभावरी शेष २६
वृन्दावनवासी जत वैष्णवेर गण ११
वृज जन मन ३४

श्रित कमलाकुच मण्डल ५१
श्रीकृष्ण-चैतन्य प्रभु दया कर मोरे १८
श्रीगुरुचरण पद्म ११
श्रीनामध्वनि ४२

श्रीरूपमञ्जरी पद	१६
सुचारु-वक्त्र मण्डलं	५८
संसार दावानल लीढ लोक	६
सई केबा सुनाइले	२३
सुखेर लागिया ए घर	२३
सुन्दर लाला शचीर दुलाला	३५
हरि हरि कवे मोर हइबे सुदिन	२०
हरि हे दयाल मोर	२४
हरि हरि विफले	२५
हरि हरये नमः	२६
हरि हरि कवे हव वृन्दावनवासी	३०
हमारे व्रज के रखवाले	३७
हरि से बड़ा हरि का नाम	३६
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति	४०

—०—

॥ श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः ॥

मंगलाचरण

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपद-कमलं श्रीगुरुन् वैष्णवांश्च
श्रीरूपं साग्रजातं सहगण-रघुनाथान्वितं तं सजीवम् ।
साद्वैतं सावधूतं परिजन सहितं कृष्ण-चैतन्य-देवम्
श्रीराधा-कृष्ण-पादान् सहगण-ललिता-श्रीविशाखान्वितांश्च ॥१॥

श्रीगुरु-प्रणाम

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥
नमः ॐ विष्णुपादाय आचार्य-सिंह रूपिणे ।
श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान-केशव इति नामिने ॥
अतिमर्त्य-चरित्राय स्वाश्रितानाञ्च-पालिने ।
जीव-दुःखे सदार्त्ताय श्रीनाम-प्रेम-दायिने ॥२॥

श्री श्रीगुरुदेव, अर्थात् श्रीदीक्षा-गुरु और भजन-शिक्षा गुरुदेव के चरणकमलों, एवं परम-परात्पर प्रभृति गुरुवर्ग, अर्थात् श्रीआनन्द तीर्थ-माधवेन्द्र पुरी प्रमुख गुरुवर्ग की, चतुर्युगोद्भूत वैष्णवों की, ज्येष्ठ भ्राता श्रीसनातन गोस्वामी, निजभक्तगण, श्री रघुनाथदास गोस्वामी के सहित श्रीरूप गोस्वामी को, श्रीअद्वैत प्रभु, श्रीनित्यानन्द प्रभु और परिजन सहित श्रीकृष्ण चैतन्यदेव को, तथा सखीमञ्जरीगण सहित श्रीललिता-विशाखा-युक्त श्रीराधाकृष्ण की मैं वन्दना करता हूँ ॥१॥

अतिमर्त चरित्र सम्पन्न, अपने आश्रितों के प्रति अत्यन्त वात्सल्य भाव से पालन करने वाले कृष्णविमुख जीवों के दुःख से सदा द्रवित चित्त तथा श्रीनाम-प्रेम प्रदाता आचार्यसिंह जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद १०८ श्रीश्री श्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी मदीय परमाराध्य श्रीगुरुवर को प्रणाम करता हूँ ॥२॥

श्रील-प्रभुपाद-वन्दना

नमः ॐ विष्णुपादाय कृष्ण-प्रेष्ठाय भूतले।
श्रीमते भक्ति सिद्धान्त-सरस्वतीति-नामिने ॥
श्रीवार्षभानवी-देवी-दयिताय कृपाब्धये।
कृष्ण-सम्बन्ध-विज्ञान-दायिने प्रभवे नमः ॥
माधुर्य्योज्ज्वल-प्रेमाढ्य श्रीरूपानुग-भक्तिद।
श्रीगौर-करुणा-शक्ति-विग्रहाय नमोऽस्तु ते ॥
नमस्ते गौर-वाणी–श्रीमूर्त्तये दीन-तारिणे।
रूपानुग-विरुद्धाप-सिद्धान्त-ध्वान्त हारिणे ॥३॥

श्रील-गौरकिशोर-वन्दना

नमो गौरकिशोराय साक्षाद्वैराग्य मूर्त्तये।
विप्रलम्भ-रसाम्भोधे पादाम्बुजाय ते नमः ॥४॥

श्रील-भक्तिविनोद-वन्दना

नमो भक्ति-विनोदाय सच्चिदानन्द-नामिने।
गौर-शक्ति-स्वरूपाय रूपानुग-वराय ते ॥५॥

कृष्ण-सम्बन्ध-विज्ञान के दाता, कृष्ण–प्रेष्ठ श्रीवार्षभानवी-देवी के प्रियतम, इस भूतल पर अवतीर्ण ॐ विष्णुपाद श्रीमद्भक्ति-सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी नामक कृपा-वारिधि प्रभु की वन्दना करता हूँ एवं जो माधुर्य के द्वारा उज्ज्वलीकृत, प्रेमपूर्ण, श्रीरूपानुग-भक्ति दानकारी तथा श्रीगौराङ्ग-महाप्रभु की करुणा-शक्ति के विग्रह स्वरूप हैं, उन्हें नमस्कार है।

जो गौर-वाणी के श्रीमूर्ति-स्वरूप, दीनजनों के त्राण-कर्त्ता और श्रीरूपानुग विचार के विरुद्ध कुसिद्धान्त-रूप अन्धकार का विनाश करने वाले हैं, उनको नमस्कार है ॥३॥

जो साक्षात् मूर्त्तिमन्त वैराग्य और विप्रलम्भ-रस के समुद्र-स्वरूप हैं, उन्हीं श्रीगौरकिशोर के चरण-कमलों में नमस्कार है ॥४॥

श्रील-जगन्नाथ-वन्दना

गौराविर्भाव-भूमेस्त्वं निर्द्देष्टा सज्जन-प्रियः।
वैष्णव-सार्वभौम–श्रीजगन्नाथाय ते नमः ॥६॥

श्रीवैष्णव-वन्दना

वांछा-कल्पतरुभ्यश्च कृपा-सिन्धुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः ॥७॥

श्रीमन्महाप्रभु-वन्दना

नमो महावदान्याय कृष्ण-प्रेम-प्रदाय ते।
कृष्णाय कृष्ण-चैतन्य-नाम्ने गौर-त्विषे नमः ॥८॥

श्रीकृष्ण-प्रणामः

हे कृष्ण ! करुणासिन्धो ! दीनबन्धो ! जगत्पते !।
गोपेश ! गोपिकाकान्त ! राधाकान्त ! नमोऽस्तु ते ॥९॥

जो रूपानुग भक्तों में श्रेष्ठ हैं तथा श्रीचैतन्य महाप्रभु के शक्ति-स्वरूप हैं उन्हीं सच्चिदानन्द नामक श्रीभक्ति-विनोद को नमस्कार है ॥५॥

जो सज्जनों के प्रिय और गौरसुन्दर के आविर्भाव-भूमि के निर्देशक हैं, उन्हीं वैष्णवसार्वभौम श्रीजगन्नाथ को नमस्कार है ॥६॥

जो वाँछा-कल्पतरु, कृपा के समुद्र तुल्य और पतितपावन हैं उन वैष्णवों को पुनः पुनः नमस्कार करता हूँ ॥७॥

जो अतुल परम करुणामय, देव-दुर्लभ कृष्ण-प्रेम प्रदाता श्रीकृष्ण-चैतन्य नामधारी और गोपीजनवल्लभ श्रीकृष्ण हैं; उन्हीं (श्रीराधा-द्युति-सुवलित) गौर-कान्तिमय गौराङ्ग-महाप्रभु को नमस्कार है ॥८॥

हे करुणासिन्धो ! हे दीनबन्धो ! हे जगत्पते ! हे गोपेश ! हे गोपीकान्त ! हे राधावल्लभ ! श्रीकृष्ण ! प्रभो ! आपके लिये मेरा कोटिशः प्रणाम है ॥९॥

श्रीराधा-प्रणामः

तप्तकाञ्चनगौराङ्गि ! राधे ! वृन्दावनेश्वरि ! ।
वृषभानुसुते ! देवि ! प्रणमामि हरिप्रिये ! ॥१०॥

सम्बन्धाधिदेव-प्रणामः

जयतां सुरतौ पङ्गोर्मम मन्द-मतेर्गती ।
मत्सर्वस्व पदाम्भोजौ राधा-मदनमोहनौ ॥११॥

दीव्यद्-वृन्दारण्य-कल्पद्रु माधः श्रीमद्रत्नागार-सिंहासनस्थौ ।
श्रीश्रीराधा-श्रीलगोविन्द-देवौ प्रेष्ठालीभिः सेव्यमानौ स्मरामि ॥१२॥

श्रीमान रासरसारम्भी वंशीवट-तटस्थितः ।
कर्षन् वेणुस्वनैर्गोपीर्गोपीनाथः श्रियेऽस्तु नः ॥१३॥

हे तप्तकाञ्चनगौराङ्गी ! हे वृन्दावनेश्वरि ! हे वृषभानुनन्दिनि ! हे हरिप्रिये ! देवी ! श्रीमति राधिके ! मैं आपको बारम्बार प्रणाम करता हूं ॥१०॥

श्री राधामदनमोहन की जय हो, अर्थात वे दोनों सर्वदा सर्वोत्कर्ष से विद्यमान रहें, क्योंकि वे दोनों परमदयालु हैं, मुझ पंगु अर्थात् दूसरे स्थान में जाने की शक्ति से रहित, एवं मन्दमति अर्थात् मन्दबुद्धि के भी, अज्ञानी एवं वृद्ध होने के नाते, जो गति अर्थात् रक्षक हैं, तथा जिन दोनों के चरण-कमल मेरे सर्वस्व स्वरूप हैं, मैं उनकी वन्दना करता हूं ॥११॥

परमशोभामय श्रीवृन्दावन में कल्पवृक्ष के नीचे, परमसुन्दर रत्नों के द्वारा बने हुये भवन में, मणिमय सिंहासन पर विराजमान एवं अपनी अतिशय प्रिय श्रीललिता - विशाखा आदि सखियों के द्वारा प्रतिक्षण जिनकी सेवा होती रहती है, मैं, उन श्रीमति राधिका एवं श्रीमान गोविन्ददेव का स्मरण करता हूं ॥१२॥

वे श्रीराधागोपीनाथ हमारी कुशलता के लिये विद्यमान रहें कि जो रास सम्बन्धी रस का आरम्भ करने वाले हैं, अतएव वंशीवट के मूलदेश में स्थित हैं अतएव अपनी वंशीध्वनि के द्वारा अनेक गोपियों को अपनी ओर आकर्षित करते रहते हैं ॥१३॥

श्रीतुलसी-प्रणामः

वृन्दायै तुलसी देव्यै प्रियायै केशवस्य च ।
कृष्णभक्तिप्रदे देवि ! सत्यवत्यै नमो नमः ॥१४॥

श्रीपञ्चतत्व-प्रणामः

पञ्चतत्त्वात्मकं कृष्णं भक्तरूपस्वरूपकम् ।
भक्तावतारं भक्ताख्यं नमामि भक्तशक्तिकम् ॥
श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभुनित्यानन्द ।
श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादिगौरभक्तवृन्द ॥१५॥

महामन्त्र

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥

श्रीनृसिंह-प्रणामः

नमस्ते नरसिंहाय प्रह्लादाह्लाद दायिने ।
हिरण्यकशिपोर्वक्षः शिलाटङ्क नखालये ॥
वागीशा यस्य वदने लक्ष्मीर्यस्य च वक्षसि ।
यस्यास्ते हृदये संवित् तं नृसिंहमहं भजे ॥

वृन्दा एवं सत्यवती - नामक तुलसीदेवी के लिये मेरा बारम्बार प्रणाम है, तथा श्रीकृष्ण की प्रियतमा तुलसीदेवी के लिये मेरा बारम्बार प्रणाम है. हे कृष्णभक्ति को देने वाली तुलसीदेवी ! आपके लिये मेरा बारम्बार प्रणाम है ॥१४॥

मैं पंचतत्वस्वरूप श्रीकृष्ण को नमस्कार करता हूं ॥१५॥

—★—

जय-ध्वनि

श्रीश्रीगुरु - गौरांग - गान्धर्विका - गिरिधारी - राधा विनोदबिहारीजी की जय (उसके पश्चात् अपने - अपने श्रीगुरुदेव का नाम उच्चारण करते हुये जय देनी चाहिये)।

जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद् भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज की जय।

जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रील-भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद की जय।

जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद परमहंस बाबाजी श्री श्रील गौरकिशोरदास गोस्वामी महाराज की जय।

जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद सच्चिदानन्द श्रील - भक्तिविनोद ठाकुर की जय।

जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद वैष्णवसार्वभौम श्रील जगन्नाथदास बाबाजी महाराज की जय।

जय श्रीगौड़ीय वेदान्ताचार्य श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभु की जय।

जय श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर की जय।

जय श्रील नरोत्तम श्रीनिवास - श्यामानन्द प्रभुत्रय की जय।

जय श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी प्रभु की जय।

जय श्रीरूप, सनातन, भट्ट रघुनाथ, श्रीजीव, गोपाल भट्ट दास - रघुनाथ षड़गोस्वामी प्रभु की जय।

जय श्रीस्वरूप दामोदर-राय रामानन्दादि श्री गौरपार्षदवृन्द की जय।

नामाचार्य श्रील हरिदास ठाकुर की जय।

प्रेम से कहो श्रीकृष्ण चैतन्य - प्रभुनित्यान्द श्री अद्वैत - गदाधर - श्रीवासादि श्रीगौरभक्त-वृन्दक जय। श्री अन्तर्द्वीप मायापुर, सीमान्तर्द्वीप, गोद्रुमद्वीप, मध्यद्वीप, कोलद्वीप ऋतुद्वीप, जन्हुद्वीप, मोद्रद्रुमद्वीप, रुद्रद्वीपात्मक श्रीनवद्वीप धाम की जय। श्रीश्री राधाकृष्ण गोप - गोपी गो गोवर्धन - द्वादश वनात्मक श्रीब्रजमण्डल की जय।

द्वादश उपवन की जय। श्री श्यामकुण्ड - राधाकुण्ड - यमुना -गगा - तुलसी - भक्तिदेवी की जय। श्री जगन्नाथ - बलदेव - सुभद्रा जी की जय। भक्तप्रवर श्री प्रह्लाद महाराज की जय। चारों धाम की जय चारों सम्प्रदायकी जय। चारों आचार्यको जय। आकर मठराज श्री - चैतन्य मठ की जय। श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति की जय। श्रीदेवानन्द गौड़ीयमठ और अन्यान्य शाखा मठ समूहकी जय। श्रीहरिनाम सङ्की-र्तन की जय। अनन्त कोटि वैष्णववृन्द की जय। समागत भक्तवृन्दकी जय। श्रीगौर प्रेमानन्दे हरि हरि बोल।

नामश्रेष्ठं मन्त्रमपि शचीपुत्रमत्र स्वरूपं
श्रीरूपं तस्याग्रजमरूपुरीं माथुरीं गोष्ठवाटीम्।
राधाकुण्डं गिरिवरमहो ! राधिका माधवाशां
प्राप्तो यस्य प्रथितकृपया श्रीगुरुं तं नतोऽस्मि॥

श्रीनाम-वन्दना

जयति जयति नामानन्दरूपं मुरारे,
विरमित-निजधर्म-ध्यान पूजादियत्नम्।
कथमपि सकृदात्तं मुक्तिदं प्राणिनां यत्
परममृतमेकं जीवनं भूषणं मे॥
मधुरमधुरमेतन्मङ्गलं मङ्गलानां
सकलनिगमवल्लीसत्फलं चित्स्वरूपम्।
सकृदपि परिगीतं श्रद्धया हेलया वा
भृगुवर ! नरमात्रं तारयेत् कृष्णनाम॥

श्रीगुरु - परम्परा

कृष्ण हइते चतुर्मुख, हय कृष्ण सेवोन्मुख,
ब्रह्मा हइते नारदेर मति।
नारद हइते व्यास, मध्व कहे व्यास - दास,
पूर्णप्रज्ञ पद्मनाभ - गति॥
नृहरि माधव - वंशे, अक्षोभ्य परमहंसे,
शिष्य बलि अङ्गीकार करे।

अक्षोभ्येर शिष्य जय, तीर्थ नामे परिचय,
ताँर दास्ये ज्ञान सिन्धु तरे ॥
ताँहा हइते दयानिधि, ताँर दास विद्यानिधि,
राजेन्द्र हइल ताँहा हइते ।
ताँहार किङ्कर जय-धर्म नामे परिचय,
परम्परा जान भाल मते ॥
जयधर्म दास्ये ख्याति, श्री पुरुषोत्तम यति,
ताँहा हइते ब्रह्मण्यतीर्थ सूरि ।
व्यासतीर्थ ताँर दास, लक्ष्मीपति व्यासदास,
ताँहा हइते माधवेन्द्रपूरी ॥
माधवेन्द्रपूरीवर, शिष्यवर श्री ईश्वर,
नित्यानन्द, श्री अद्वैत विभु ।
ईश्वरपूरी के धन्य, करिलेन श्री चैतन्य,
जगत् गुरु गौर महाप्रभु ॥
महाप्रभु श्री चैतन्य, राधा कृष्ण नहे अन्य,
रूपानुग जनेर जीवन ।
विश्वम्भर प्रियङ्कर, श्री स्वरूप दामोदर,
श्री गोस्वामी रूप सनातन ॥
रूप प्रिय महाजन, जीव - रघुनाथ हन,
ताँर प्रिय कवि कृष्णदास ।
कृष्णदास प्रियवर, नरोत्तम सेवापर
जाँर पद विश्वनाथ आश ॥
विश्वनाथ भक्तनाथ, बलदेव जगन्नाथ,
ताँर प्रिय श्री भक्तिविनोद .
महाभागवतवर, श्री गौरकिशोरवर,
हरि भजने ते जाँर मोद ॥
श्री वार्षभानवी-वरा, सदा सेव्य सेवा - परा,
ताँहार दयितदास नाम ।
एइ सब हरिजन, गौरांगेर निज - जन,
ताँदेर उच्छिष्टे मोर काम ॥

गुर्वष्टकम्

संसार-दावानल-लीढ़-लोक, त्राणाय कारुण्यघनाघनत्वम् ।
प्राप्तस्य कल्याण-गुणार्णवस्य, वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥१॥

महाप्रभोः कीर्त्तन-नृत्य-गीत,वादित्रमाद्यन्मनसो रसेन ।
रोमाञ्च-कम्पाश्रु-तरङ्ग-भाजो, वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥२॥

श्रीविग्रहाराधन-नित्य नाना,शृङ्गार-तन्मन्दिर-मार्ज्जनादौ ।
युक्तस्य भक्तांश्च नियुञ्जतोऽपि,वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥३॥

चतुर्विध-श्रीभगवत्प्रसाद, स्वाद्वन्नतृप्तान् हरिभक्तसङ्घान् ।
कृत्वैव तृप्तिं भजतः सदैव, वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥४॥

श्रीराधिकामाधवयोरपार, माधुर्य्य-लीला-गुण-रूप-नाम्नाम् ।
प्रतिक्षणास्वादन लोलुपस्य, वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥५॥

संसार-दावानलसे सन्तप्त लोगों की रक्षा के लिए जो करुणा के घने मेघस्वरूप होकर कृपावारि वर्षण करते हैं, मैं उन्हीं कल्याण-गुणनिधि श्रीगुरुदेव के पादपद्मों की वन्दना करता हूँ ॥१॥

सङ्कीर्त्तन, नृत्य, गीत तथा वाद्यादि के द्वारा उन्मत्तचित्त श्रीमन्–महाप्रभुके प्रेमरस में जिनके रोमाञ्च, कम्प और अश्रुतरङ्ग उद्गत होते हैं, मैं उन्हीं श्रीगुरुदेव के पादपद्मों की वन्दना करता हूँ ॥२॥

जो श्रीभगवद्विग्रह की नित्य-सेवा, शृङ्गाररसोद्दीपक तरह-तरह की वेश रचना और श्रीमन्दिर के मार्जन आदि सेवाओं में स्वयं नियुक्त रहते हैं तथा (अनुगत) भक्तजनको नियुक्त करते हैं, मैं उन्हीं श्रीगुरुदेवके पादपद्मों की वन्दना करता हूँ ॥३॥

जो श्रीकृष्णभक्त-वृन्दको चर्व्य, चुष्य, लेह्य और पेय–इन चतुर्विध रस-समन्वित सुस्वाद प्रसादान्न द्वारा परितृप्त कर (अर्थात् प्रसाद-सेवनके द्वारा प्रपञ्चनाश और प्रेमानन्द का उदय करवाकर) स्वयं तृप्ति लाभ करते हैं, उन्हीं श्रीगुरुदेव के पादपद्मों की मैं वन्दना करता हूं ॥४॥

निकुञ्जयूनो रतिकेलिसिद्धयै, या यालिभिर्युक्तिरपेक्षणीया ।
तत्रातिदाक्षादतिवल्लभस्य, वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥६॥

साक्षाद्धरित्वेन समस्तशास्त्रै, रुक्तस्तथा भाव्यत एव सद्भिः ।
किन्तु प्रभोर्यः प्रिय एव तस्य, वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥७॥

यस्य प्रसादाद्भगवत्प्रसादो, यस्याप्रसादान्नगतिः कुतोऽपि ।
ध्यायंस्तुवंस्तस्य यशस्त्रिसन्ध्यं,वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥८॥

श्रीमद्गुरोरष्टकमेतदुच्चै-र्ब्राह्मे मुहूर्त्ते पठति प्रयत्नात् ।
यस्तेन वृन्दावन-नाथ साक्षात्-सेवैव लभ्या जनुषोऽन्त एव ॥९॥

जो राधामाधव के अनन्त माधुर्यमय नाम, रूप, गुण और लीला-समूहका आस्वादन करने के लिए सर्वदा लुब्धचित्त हैं, उन्हीं श्रीगुरुदेवके पादपद्मों की मैं वन्दना करता हूँ ॥५॥

निकुञ्ज विहारी 'व्रज-युव-द्वन्द्व के' रतिक्रीड़ा-साधन के निमित्त सखियां जो जो युक्ति अवलम्बन करती हैं, उस विषय में अति निपुण होने के कारण जो उनके अतिशय प्रिय हैं, उन्हीं श्रीगुरुदेव के पादपद्मों की मैं वन्दना करता हूँ ॥६॥

निखिल शास्त्रों ने जिनका साक्षात् हरिके अभिन्न-विग्रहरूप से गान किया है एवं साधुजन भी जिनकी उसी प्रकारसे चिन्ता किया करते हैं, तथापि जो-प्रभु भगवान्के एकान्त प्रिय हैं, उन्हीं (भगवान् के अचिन्त्य-भेदाभेद-प्रकाश-विग्रह) श्रीगुरुदेवके पादपद्मोंकी मैं वन्दना करता हूँ ॥७॥

एकमात्र जिनकी कृपा द्वारा ही भगवद्-अनुग्रह लाभ होता है, जिनके अप्रसन्न होने से जीवोंका कहीं भी निस्तार नहीं है, मैं त्रिसन्ध्या उन्हीं श्रीगुरुदेवका कीर्त्ति समूह स्तव और ध्यान करते-करते उनके पादपद्मोंकी वन्दना करता हूँ ॥८॥

जो व्यक्ति इस गुरुदेवाष्टक का ब्राह्म मुहूर्त्त में (अरुणोदयसे चार दण्ड पहले) अतिशय यत्न के साथ उच्चस्वर से पाठ करते हैं, वे वस्तु-सिद्धि के समय वृन्दावनचन्द्र का सेवाधिकार प्राप्त करते हैं ॥९॥

[१]

श्री गुरुचरण-पद्म, केवल भकति-सद्म, वन्दोंमुंइ-सावधान मते ।
जाँहार प्रसादे भाई, ए भव तरिया जाई, कृष्ण प्राप्ति हय जाँहा हइते ॥
गुरुमुखपद्म वाक्य, चित्तेते करिया ऐक्य, आर न करिह मने आशा ।
श्रीगुरुचरणे रति, एई से उत्तम गति, ये प्रसादे पूरे सर्व आशा ॥
चक्षुदान दिला जेई, जन्मे जन्मे प्रभु सेई, दिव्यज्ञान हृदे प्रकाशित ।
प्रेमभक्ति जाँहा हइते, अविद्या विनाश याते, वेदे गाय जाँहार चरित ॥
श्रीगुरु करुणा सिन्धु, अधम जनार बन्धु, लोकनाथ लोकेर जीवन ।
हा हा प्रभु कर दया, देह मोरे पदछाया, तुया पदे लईनु शरण ॥

[२]

गुरुदेव !
कृपाबिन्दु दिया, करो एई दासे, तृणापेक्षा अति हीन ।
सकल सहने, बल दिया कर, निज माने स्पृहाहीन ॥
सकले सम्मान, करिते शकति, देह नाथ ! यथायथ ।
तबे तो गाइब, हरिनाम सुखे, अपराध हबे हत ॥
कबे हेन कृपा, लभिया ए जन, कृतार्थ हईबे नाथ ।
शक्ति—बुद्धि हीन, आमि अति दीन, करे मोरे आत्मसाथ ॥
योग्यता बिचारे, किछु नाहि पाई, तोमार करुणा सार ।
करुणा ना हइले, काँदिया काँदिया, प्राण ना राखिब आर ॥

[३]

वृन्दावनवासी जत वैष्णवेर गण ।
प्रथमे वन्दना करि सबार चरण ॥
नीलाचलवासी जत महाप्रभुर गण ।
भूमिते पड़िया वन्दों सबार चरण ॥

(१) सद्म = भवन, जाँहा हइते = जिससे, जाँहार=जिसका, जनार=जन ।
(२) हबे—होगा, हत=नष्ट, हन=ऐसी, काँदिया=रो—रोकर, आर=और ।

नवद्वीपवासी जत महाप्रभुर भक्त।
सबार चरण वन्दों हइया अनुरक्त॥
महाप्रभुर भक्त जत गौड़देशे स्थिति।
सबार चरण वन्दों करिया प्रणति॥
जे देशे जे देशे बैसे गौरांगेर गण।
ऊर्ध्व बाहु करि वन्दों सबार चरण॥
हैयाछेन हइबेन प्रभुर जत दास।
सबार चरण बन्दों दन्ते करि' घास॥
ब्रह्माण्ड तारिते शक्ति धरे जने जने।
ए वेद पुराणे गुण गाय जेवा शुने॥
महाप्रभुर गण सब पतित पावन।
ताइ लोभे मुइ पापी लइनु शरण॥
वन्दना करिते मुइ कत शक्ति धरि।
तमो-बुद्धिदोषे मुइ दम्भ मात्र करि॥
तथापि मकेर भाग्य मनेर उल्लास।
दोष क्षमि' मो-अधमे कर निज दास॥
सर्ववांछा सिद्धि हय यमबन्ध छुटे।
जगते दुर्लभ हइया प्रेमधन लुटे॥
मनेर वासना पूर्ण अचिराते हय।
देवकीनन्दनदास एइ लोभे कय॥

(३) जत = जितने, वैष्णवेर = वैष्णवों के, भूमिते पड़िया = भूमि पर लेटकर, सबार = सबके, हइया = होकर, हैयाछेन = हुए हैं, हइबेन = होंगे, दन्ते = दांतों तले, जेवा = जो, मुइ = मैं, मूकेर = गूंगे का, अचिराते = शीघ्र।

[४]

ओहे !
वैष्णव ठाकुर, दयार सागर, ए दासे करुणा करि' ।
दिया पदछाया, शोध हे आमारे, तोमार चरण धरि ॥
छय वेग दमि,' छय दोष शोधि, छय गुण देह दासे ।
छय सत्संग, देह हे आमारे, बसेछि संगेर आशे ॥
एकाकी आमार, नाहि पाय बल, हरिनाम–सङ्कीर्तने ।
तुमि कृपा करि', श्रद्धाबिन्दु दिया, देह कृष्ण-नाम-धने ॥
कृष्ण से तोमार, कृष्ण दिते पार, तोमार शकति आछे ।
आमि त' कांगाल, कृष्ण कृष्ण बलि', धाइ तब पाछे पाछे ॥

[५]

ठाकुर वैष्णव-पद, अवनीर सुसम्पद,
शुन भाई, हइया एकमन ।
आश्रय लइया भजे, तारे कृष्ण नाहि त्यजे,
आर सब मरे अकारण ॥

(४) शोध=शुद्ध, आमारे=मुझे, तोमार=तुम्हारे,
छय वेग=वाणी, मन, क्रोध, जिह्वा, उदर और जननेन्द्रिय का वेग ।
छय दोष = अधिक आहार, भक्ति प्रतिकूल चेष्टा, प्रजल्प, भक्ति नियमों में दुराग्रह अथवा अनाग्रह, कुसंग, भक्ति के अतिरिक्त दूसरे असत् मतवादों को ग्रहण करने की तृष्णा ।
छय गुण = भक्ति साधन में उत्साह, निश्चयता, धैर्य, भक्ति पौषक कार्यों का अनुष्ठान, कुसंग त्याग, सदाचार या सद्वृत्ति ।
छय सत्संग = प्रीति पूर्वक भक्तों को आवश्यक वस्तु देना, उनके द्वारा दी गई वस्तुओं को ग्रहण करना, उनके समीप हृदय की बात व्यक्त करना, भक्ति रहस्य को सुनना, प्रसाद सेवन और सेवन कराना ।
बसेछि = बैठा हूँ, आमार=मेरा, बल=बोलकर ।
(५) अवनीर=जगत का, प्रवंचन=धोखा, जाते = जिसमें, हइल = हुआ ।

वैष्णव-चरण-जल, प्रेम-भक्ति दिते बल,
आर केह नहे बलवन्त ।
वैष्णव चरण-रेणु, मस्तके भूषण बिनु,
आर नाहि भूषणेर अन्त ॥
तीर्थ-जल पवित्र गुणे, लिखियाछे पुराणे,
से सब भक्तिर प्रवञ्चन ।
वैष्णवेर पादोदक- सम नहे एइ सब,
जाते हय वाञ्छित पूरण ॥
वैष्णव संगेते मन, आनन्दित अनुक्षण,
सदा हय कृष्ण-परसंग ।
दीन नरोत्तम कान्दे, हिया धैर्य नाहि बान्धे,
मोर दशा केन हइल भंग ॥

[६]

एइबार करुणा कर वैष्णव गोसांइ ।
पतित पावन तोमा बिने केह नांइ ॥
काहार निकटे गेले पाप दूरे जाय ।
एमन दयाल प्रभु केबा कोथा पाय ? ॥
गङ्गार परश हैले पश्चाते पावन ।
दर्शने पवित्र कर-एइ तोमार गुण ॥
हरि स्थाने अपराध तारे' हरिनाम ।
तोमा स्थाने अपराधे नाहिक एडान ॥
तोमार हृदये सदा गोबिन्द विश्राम ।
गोबिन्द कहेन-मम वैष्णव पराण ॥
प्रतिजन्मे करि आशा चरणेर धूलि ।
नरोत्तमे कर दया आपनार बलि ॥

(६) एमन = ऐसा, केबा = कौन, कोथा = कहां, परश = स्पर्श, पश्चाते = पीछे, तोमा = तुम्हारे, एडान = छुटकारा ।

[७]

कि रूपे पाइब सेवा मुइ दुराचार।
श्रीगुरु वैष्णवे रति ना हइल आमार॥
अशेष मायाते मन मगन हइल।
वैष्णवेते लेशमात्र रति ना जन्मिल॥
विषये भुलिया अन्ध हइनु दिवानिशि।
गले फाँस दिते फिरे माया से पिशाची॥
इहारे करिया जय छाडान ना जाय।
साधु कृपा बिना आर नाहिक उपाय॥
अदोष दरशि प्रभु पतित उद्धार।
एइ बार नरोत्तमे करह निस्तार॥

[८]

निताइ पद कमल, कोटि चन्द्र सुशीतल,
जे छायाय जगत जुड़ाय।
हेन निताइ बिने भाइ, राधाकृष्ण पाइते नाइ,
दृढ़ करि धर निताइयेर पाय॥
से सम्बन्ध नाहि जार, वृथा जन्म गेल तार,
सेइ पशु बड़ दुराचार।
निताइ ना बलिल मुखे, मजिल संसार सुखे,
विद्याकुले कि करिबे तार॥
अहंकारे मत्त हइया, निताइ-पद पासरिया,
असत्येरे सत्य करि मानि।
निताइयेर करुणा हबे, ब्रजे राधाकृष्ण पाबे,
धर निताइयेर चरण दु'खानि॥

(७) कि रूपे = कैसे, मुइ = मैं, इहारे = इसको।
(८) जुड़ाय=शीतल, मजिल=डूब गया, पासरिया=भूलकर, रांगा= रंगीले।

निताइ चरण सत्य, ताँहार सेवक नित्य,
निताइ पद सदा कर आश।
नरोत्तम बड़ दुःखी, निताइ मोरे कर सुखी,
राख रांगा चरणोर पाश ॥

[९]

धन मोर नित्यानन्द, पति मोर गौरचन्द्र,
प्राण मोर युगल किशोर ।
अद्वैत आचार्य बल, गदाधर मोर कुल,
नरहरि विलसइ मोर ॥
वैष्णवेर पदधूलि, ताहे मोर स्नान केलि,
तर्पण मोर वैष्णवेर नाम ।
विचार करिया मने, भक्तिरस आस्वादने,
मध्यस्थ श्रीभागवत पुराण ॥
वैष्णवेर उच्छिष्ट, ताहे मोर मनोनिष्ठ,
वैष्णवेर नामेते उल्लास ।
वृन्दावने चौतारा, ताहे मोर मनो धेरा,
कहे दीन नरोत्तमदास ॥

[१०]

गौरांगेर दुटी पद, जार धन सम्पद,
से जाने भकति रस सार।
गौरांगेर मधुर लीला, जार कर्णे प्रवेशिला,
हृदय निर्म्मल भेल तार ॥
जे गौरांगेर नाम लय, तार हय प्रेमोदय,
तारे मुइ जाइ बलिहारी।

(१०) जार=जिसके, भेल=हुआ, तार=उसका, भुरे=विभावित होना, पाश=समीप, जेवा=जो, थाके=रहे, डाके=पुकारे।

गौरांग गुणेते झुरे, नित्यलीला तारे स्फुरे;
से जन भकति अधिकारी ॥

गौरांगेर संगी गणे, नित्यसिद्ध करि माने;
से जाय व्रजेन्द्र सुत पाश।
श्रीगौड़मण्डल भूमि, जेवा जाने चिन्तामणि;
तार हय व्रज भूमे वास ॥

गौर प्रेम रसार्णवे, से तरङ्गे जेवा डुबै;
से राधा माधव अन्तरंग।
गृहे वा वनेते थाके, हा गौराङ्ग बले डाके;
नरोत्तम मांगे तार सङ्ग ॥

[११]

गौराङ्ग बलिते हबे पुलक शरीर।
हरि हरि बलिते नयने बहे नीर॥
आर कबे निताइचाँदेर करुणा हइबे।
संसार वासना मोर कबे तुच्छ हबे॥
विषय छाड़िया कबे शुद्ध हबे मन।
कबे हाम हेरब श्रीवृन्दावन॥
रूप–रघुनाथ पदे हइबे आकुति।
कबे हाम बुझब से युगल पीरिति॥
रूप-रघुनाथ पदे रहु मोर आश।
प्रार्थना करये सदा नरोत्तमदास।

(११) बलिते=कहने से, हाम = मैं, सेई=उस, आकुति=आकांक्षा

[१२]

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु दया कर मोरे।
तोमा बिना के दयालु जगत संसारे॥
पतित पावन हेतु तव अवतार।
मो सम पतित प्रभु ना पाइबे आर॥
हा हा प्रभु नित्यानन्द प्रेमानन्द सुखी।
कृपावलोकन कर आमि बड़ दुखी॥
दया कर सीतापति अद्वैत गौसांई।
तव कृपाबले पाइ चैतन्य निताई॥
हा हा स्वरूप, सनातन, रूप, रघुनाथ।
भट्टयुग, श्रीजीव, हा प्रभु लोकनाथ॥
दया कर श्रीआचार्य प्रभु श्रीनिवास।
रामचन्द्र सङ्ग मांगे नरोत्तम दास॥
दया कर प्रभुपाद श्रीदयित दास।
वैष्णवेर कृपा मांगे ए अधम दास॥
दया कर गुरुदेव पतित पावन।
श्रीचरण सेवा मांगे ए पतित जन॥

[१३]

जे आनिल प्रेमधन करुणा प्रचुर।
हेन प्रभु कोथा गेला आचार्य ठाकुर॥

(१२) श्रीदयितदास=श्री श्रीभक्तिसिद्धान्त सरस्वती।

(१३) जे आनिल=जो लेकर आए, कोथा=कहाँ, गेल=गए, गोरा नटराज=श्री गौरांगदेव, कुटिब=पटकूंगा, पशिब=प्रवेश करूंगा, निधि=समुद्र, कैल=किया, पाइया=पाकर, कान्दे=रो रहा है।

काँहा मोर स्वरूप रूप काँहा सनातन ।
काँहा दास रघुनाथ पतित पावन ॥
काँहा मोर भट्टयुग काँहा कविराज ।
एक काले कोथा गेला गोरा नटराज ॥
पाषाणे कुटिब माथा, अनले पशिब ।
गौरांग गुणेर निधि कोथा गेले पाब ॥
ज सब संगीर संगे जे कैल विलास ।
से संग ना पाइया कान्दे नरोत्तमदास ॥

[१४]

श्रीरूपमञ्जरी पद, सेइ मोर सम्पद,
सेइ मोर भजन पूजन ।
सेइ मोर प्राणधन, सेइ मोर आभरण,
सेइ मोर जीवनेर जीवन ॥
सेइ मोर रसनिधि, सेइ मोर वांछासिद्धि,
सेइ मोर वेदेर धरम ।
सेइ व्रत सेइ तपः, सेइ मोर मन्त्र जप,
सेइ मोर धरम करम ॥
अनुकूल हबे विधि, से पदे हइबे सिद्धि,
निरखिब ए-दुइ नयने ।
से रूप माधुरी राशि, प्राण कुवलय शशी,
प्रफुल्लित हबे निशि दिने ॥
तुया अदर्शन अहि, गरले जारल देही,
चिरदिन तापित जीवन ।
हा हा प्रभु कर दया, देह मोरे पदछाया,
नरोत्तम लइल शरण ॥

(१४) मोर=मेरा, विधि=भाग्य, कुवलय=नीलकमल, हबे=होना, तुया=तुम्हारा, अहि=सर्प, जारल=जलाया ।

[१५]

कबे गौर बने, सुर धुनी-तटे,
हा राधे, हा कृष्ण बले ।
काँदिया बेड़ाब, देह सुख छाड़ि,
नाना लता तरु तले ।।
श्वपच-गृहेते, मांगिया खाइब,
पिब सरस्वती जल ।
पुलिने पुलिने, गड़ागड़ि दिब,
करि कृष्ण कोलाहल ।।
धामवासी जने, प्रणति करिया,
मागिब कृपार लेश ।
वैष्णव चरण- रेणु गाय माखि,
धरि अवधूत वेश ।।
गौर ब्रज जने, भेद ना देखिब,
हइब बरजवासी ।
धामेर स्वरूप, स्फुरिबे नयने,
हइब राधार दासी ।।

[१६]

हरि हरि, कबे मोर हइबे सुदिन ।
भजिब श्रीराधाकृष्ण हइया प्रेमाधीन ।।
सुयन्त्रे मिशाइया गाव सुमधुर तान ।
आनन्दे करिब दोंहार रूप गुण गान ।।

(१५) श्वपच=चांडाल, पिब=पीऊंगा, गड़ागड़ि=लोट पोटकर, गायमाखि=शरीर में मलकर ।

(१६) सुयन्त्रे=मृदंग और करताल, मिशाइया=मिलाकर, कान्दिब=रोऊंगा, भिजिबे=भीगेगा, पुरुक=पूर्ण हो ।

राधिका, गोविन्द बलि कांदिब उच्च स्वरे।
भिजिबे सकल अङ्ग नयनेर नीरे॥
एइबार करुणा कर रूप-सनातन।
रघुनाथदास मोर श्रीजीव जीवन॥
एइबार करुणा कर ललिता विशाखा।
सख्यभावे श्रीदाम सुबलादि सखा॥
सबे मिलि कर दया पुरुक मोर आश।
प्रार्थना करये सदा नरोत्तमदास॥

[१७]

राधा कृष्ण प्राण मोर जुगल किशोर।
जीवने मरणे गति आर नाहि मोर॥
कालिन्दीर कूले केलि कदम्बेर वन।
रतन वेदीर उपर बसाब दुजन॥
श्याम गौरी अङ्गे दिब(चुया) चन्दनेर गन्ध।
चामर ढुलाब कवे हेरिब मुखचन्द्र॥
गाँथिया मालतीर माला दिब दोंहार गले।
अधरे तुलिया दिब कर्पूर ताम्बूले॥
ललिता विशाखा आदि जत सखीवृन्द।
आज्ञाय करिब सेवा चरणारविन्द॥
श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभुर दासेर अनुदास।
सेवा अभिलाष करे नरोत्तमदास॥

(१७) बसाब=बैठा हुआ, दुजन=युगल को, जत=जितने।

[१८]

तातल सैकते वारि बिन्दु-सम
सुत-मित रमणी-समाजे।
तोहे बिसरि मन ताहे समर्पिनु
अब मभु हब कोन काजे॥
माधव, हाम परिणाम निराशा।
तुहुँ जगतारण दीन दयामय
अतये तोहारि विशोयासा॥
आध जनम हाम निदे गोङायनु
जरा शिशु कतदिन गेला।
निधुवने रमणी रस रंगे मातनु
तोहे भजब कोन बेला॥
कत चतुरानन मरि मरि जाओत
न तुया आदि अवसाना।
तोहे जनमि पुन तोहे समाओत,
सागर-लहरी समाना॥
भणये विद्यापति शेष शमन-भये
तुया बिना गति नाहि आरा।
आदि अनादिक नाथ कहाओसि
अब्तारण-भार तोहारा॥

(१८) तातल = तप्त, सैकते = बालू में, तोहे = तुम्हें, मभु = मेरा, अतए = अतएव, तोहारि = तुम्हारा, गेला = बीता, निधुवने = काम केलि के स्थान में, न तुया = तुम्हारा नहीं, भणये = कहते हैं, शमन = मृत्यु।

[१६]

भजहुँ रे मन श्रीनन्दनन्दन, अभय चरणारविन्द रे ।
दुर्लभ मानव जनम सत्संगे, तरहु ए भव सिन्धु रे ॥
शीत आतप वात बरिषण, ए दिन यामिनी जागि रे ।
विफले सेविनु कृपण दुरजन, चपल सुखलव लागि रे ॥
ए धन यौवन, पुत्र परिजन, इथे कि आछे परतीति रे ।
कमलदल-जल, जीवन टलमल, भजहुँ हरिपद निति रे ॥
श्रवण, कीर्तन, स्मरण, वन्दन, पादसेवन, दास्य रे ।
पूजन, सखीजन, आत्मनिवेदन, गोविन्ददास अभिलाष रे ॥

[२०]

सइ ! केबा सुनाइले श्याम नाम ? ।
कानेर भितर दिया, मरमे पशिल गो, आकुल करिल मोर प्राण ॥
ना जानि कतेक मधु, श्यामनामे आछे गो, वदन छाड़िते नाहि पारे ।
जपिते जपिते नाम, अवश करिल गो, केमने पाइब सइ तारे ॥
नाम - परतापे जार, ऐछन करिल गो, अंगेर परशे किबा हय ।
जेखाने वसति तार, नयन हेरिब गो, युवती धरम कैछे रय ॥
पासरिते चाहि मने, पासरा ना जाय गो, कि करिब कि हबे उपाय ।
कहे द्विज चण्डीदासे, कुलवती कुलनाशे, आपनार यौवन जाचाय ॥

[२१]

सुखेर लागिया, ए घर बांधिनु, आगुने पुड़िया गेल ।
अमिया - सागरे, सिनान करिते, सकलि गरल भेल ॥

(१६) यामिनी = रात, इथे = इसमें, आछे = है, परतीति = विश्वास, नीति = नित्य ।

(२०) पशिल=प्रवेश किया, गो=अरी, बदन=मुख ।

सखि ! कि मोर कपाले लेखि।
शीतल बलिया, चाँद सेविनु, भानुर किरण देखि ॥
उचल बलिया, अचले चड़िनु, पड़िनु अगाध जले ।
लछमी चाहिते, दारिद्र बेढ़ल, माणिक हारानु हेले ॥
नगर बसालाम, सागर बांधिलाम, माणिक पाबार आशे ।
सागर शुकाल, माणिक लुकाल, अभागीर-करम-दोषे ॥
पियास लागिया, जलद सेविनु, बजर पाड़िया गेल ।
कहे चण्डीदास, श्यामेर पिरीति, मरमे रहल शेल ॥

[२२]

हरि हे दयाल मोर जय राधानाथ ।
बारबार एइ बार लह निज साथ ॥
बहु योनि भ्रमि नाथ, लइनु शरण ।
निजगुणे कृपा कर अधम-तारण ॥
जगत-कारण तुमि जगत-जीवन ।
तोमा छाड़ा कार नाहि हे राधारमण ! ॥
भुवनमंगल तुमि भुवनेर पति ।
तुमि उपेक्षिले नाथ कि हइबे गति ॥
भाबिया देखिनु एइ जगत माझारे ।
तोमा बिना केह नाहि ए दासे उद्धारे ॥

[२३]

राधा भजने यदि मति नाहि भेला ।
कृष्ण भजन तब अकारण गेला ॥

(२१) लागिया = के लिए, पुड़ियागेल = जल गया, अमिया सागरे = अमृत के समुद्र में, सिनान = स्नान, उचल = ऊंचा, अचले = पर्वत पर, बेढ़ल = बढ़ गया, लुकाल = छिप गया ।
(२२) लह = लेलो, उपेखिले = उपेक्षा करने से ।

आतप - रहित सूरय नाहि जानि ।
राधा - विरहित माधव नाहि मानि ॥
केवल माधव पूजये, सो अज्ञानी ।
राधा - अनादर करइ अभिमानी ॥
कबहिं नाहि करबि ताँकर सङ्ग ॥
चित्ते इच्छसि यदि व्रजरस - रङ्ग ॥
राधिका - दासी यदि होय अभिमान ।
शीघ्रइ मिलइ तब गोकुल कान ॥
ब्रह्मा, शिव, नारद, श्रुति, नारायणी ।
राधिका - पदरज पूजये मानि ॥
उमा, रमा, सत्या, शची, चन्द्रा, रुक्मिणी ।
राधा - अवतार सबे, आम्नाय - वाणी ॥
हेन राधा - परिचर्या जाँकर धन ।
भकतिविनोद तार मागये चरण ॥

[२४]

हरि हरि ! विफले जनम गोङाइनु ।
मनुष्य जनम पाइया, राधाकृष्ण ना भजिया,
जानिया शुनिया विष खाइनु ॥
गोलोकेर प्रेमधन, हरिनाम संकीर्तन ।
रति ना जन्मिल केने ताय
संसार विषानले, दिवानिशि हिया ज्वले,

(२३) भेला = हुआ, आतप = ताप ।

(२४) गोङाइनु = गंवाया, जुडाइते = शीतल करने के लिए, कैनु = किया, छिल = था, चुत= साथ, ठेलिह = धक्का देना, आछे = है ।

जुड़ाइते ना कैनु उपाय ॥
ब्रजेन्द्र नन्दन जेइ, शचीसुत हैल सेइ,
बलराम हइल निताइ ।
दीन हीन जत छिल, हरिनामे उद्धारिल
तार साक्षी जगाइ माधाइ ॥
हा हा प्रभु नन्दसुत, वृषभानुसुता युत,
करुणा करह एइ बार ।
नरोत्तमदास कय, ना ठेलिओ राङ्गा पाय,
तोमा बिने के आछे आमार ॥

[२५]

हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः ।
यादवाय माधवाय, केशवाय नमः ॥
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन ।
गिरिधारी गोपीनाथ मदनमोहन ॥
श्रीचैतन्य नित्यानन्द, श्रीअद्वैत सीता ।
हरि - गुरु - वैष्णव भागवत - गीता ॥
श्रीरूप, सनातन, भट्ट-रघुनाथ ।
श्रीजीव गोपालभट्ट, दास-रघुनाथ ॥
एइ छय गोसांईर करि चरण-वन्दन ।
जाहा हइते विघ्ननाश अभीष्ट - पूरण ॥
एइ छय-गोसांई जार मुइ तार दास ॥

(२५) जार मुई = जिसका मैं हूं, तार = उसका, ता सवार = उन सबके, तादेर = उनका भक्तसने = भक्त के साथ, कैला = किया, मजाइया = अनुरक्त होकर ।

तां, सबार पद रेणु मोर पञ्चग्रास ॥
ताँदेर चरण सेवि भक्तसने वास ।
जनमे - जनमे हय, एइ अभिलाष ॥
एइ छय गोसांई जबे ब्रजे कैला वास ।
राधा -कृष्ण नित्यलीला करिला प्रकाश ॥
आनन्दे बल हरि भज वृन्दावन ।
श्रीगुरु–वैष्णव–पदे मजाइया मन ॥
श्रीगुरु वैष्णव पादपद्म करि आश ।
नाम सङ्कीर्तन कहे नरोत्तमदास ॥

[२६]

जय राधे, जय कृष्ण, जय वृन्दावन ।
श्रीगोविन्द गोपीनाथ मदनमोहन ॥
श्यामकुण्ड राधाकुण्ड गिरि–गोवर्धन ।
कालिन्दी यमुना जय जय महावन ॥
केशीघाट वंशीवट द्वादश कानन ।
जाँहा सब लीला कैल श्रीनन्दनन्दन ॥
श्रीनन्द–यशोदा जय, जय गोपगण ।
श्रीदामादि जय, जय धेनुवत्सगण ॥
जय वृषभानु, जय कृत्तिका–सुन्दरी ।
जय पौर्णमासी, जय आभीर नागरी ॥
जय जय गोपीश्वर वृन्दावन–माझ ।
जय जय कृष्णसखा वटु द्विजराज ॥
जय रामघाट, जय रोहिणीनन्दन ।
जय जय वृन्दावनवासी जत जन ॥
जय द्विजपत्नी, जय नागकन्यागण ।
भक्तिते जाँहारा पाइल गोविन्द चरण ॥
श्रीरासमण्डल जय, जय राधाश्याम ।

जय जय रास लीला सर्वमनोरम ॥
जय जयोज्ज्वल-रस सर्वरस - सार ।
परकीयाभावे जाहा व्रजेते प्रचार ॥
श्री जान्हवी - पादपद्म करिया स्मरण ।
दीन कृष्णदास कहे नाम-संकीर्तन ॥

[२७]

यशोमती-नन्दन, व्रजवर नागर, गोकुल-रञ्जन कान ।
गोपी-पराणधन, मदन-मनोहर, कालीय-दमन विधान ॥
अमल हरिनाम, अमिय विलासा ।
विपिन-पुरन्दर, नवीन नागरवर, न्वशीवदन सुवासा ॥
व्रजजन पालन, असुरकुल-नाशन, नन्द-गोधन-राखवाला ।
गोविन्द माधव, नवनीत-तस्कर, सुन्दर नन्दगोपाला ॥
यामुन-तटचर, गोपी वसनहर, रास-रसिक कृपामय ।
श्रीराधा-वल्लभ, वृन्दावन-नटवर, भकतिविनोद आश्रय ॥

[२८]

जय जय राधे कृष्ण गोविन्द ।
राधे गोविन्द राधे गोविन्द ॥
जय जय श्यामसुन्दर, मदनमोहन वृन्दावनचन्द्र ।
जय जय राधारमण रासबिहारी श्रीगोकुलानन्द ॥
जय जय रासेश्वरी विनोदिनी भानुकुलचन्द्र ।
जय जय ललिता विशाखा आदि जत सखीवृन्द ॥
जय जय श्रीरूपमञ्जरी रतिमञ्जरी अनङ्ग ।
जय जय पौर्णमासी योगमाया जय वीरावृन्द ॥
सबे मिलि कर कृपा आमि अति मन्द ।
तुमि मोर कृपा करि देह-युगलचरणारविन्द ॥

[२९]

विभावरी-शेष, आलोक-प्रवेश, निद्रा छाड़ि उठ जीव ।
बल हरि हरि, मुकुन्द मुरारि, राम-कृष्ण-हयग्रीव ॥

नृसिंह, बामन, श्रीमधुसूदन, व्रजेन्द्रनन्दन श्याम ।
पूतना-घातन, कैटभ-शातन, जय दाशरथि-राम ॥

यशोदा-दुलाल, गोविन्द-गोपाल, वृन्दावन-पुरन्दर ।
गोपीप्रिय-जन, राधिका-रमण, भुवन-सुन्दरवर ॥

रावणान्तकर, माखन-तस्कर, गोपीजन-वस्त्रहारी ।
व्रजेर राखाल, गोपवृन्दपाल, चित्तहारी वंशीधारी ॥

योगीन्द्र-बन्दन, श्रीनन्द-नन्दन, व्रजजन भयहारी ।
नवीन नीरद, रूप मनोहर, मोहन वंशीविहारी ॥

यशोदा-नन्दन, कंस-निसूदन, निकुञ्जरास विलासी ।
कदम्ब कानन, रास परायण, वृन्दाविपिन-निवासी ॥

आनन्द-वर्धन, प्रेम-निकेतन, फूलशरयोजक काम ।
गोपाङ्गनागण, चित्त-विनोदन, समस्त गुणगण-धाम ॥

यामुन-जीवन, केलिपरायण, मानसचन्द्र चकोर ।
नाम-सुधारस, गाओ कृष्ण-यश, राख वचन मन मोर ॥

[३०]

जय राधामाधव जय कुञ्जबिहारी ।
जय गोपीजनबल्लभ जय गिरिवरधारी ॥

जय यशोदानन्दन, जय व्रजजन रञ्जन ।
जय यामुनतीर — वनचारी ॥

[३१]

राधाकुण्ड तट कुञ्जकुटीर । गोवर्धन-पर्वत यामुनतीर ॥
कुसुम-सरोवर मानस गङ्गा । कलिन्दनन्दिनी विपुल तरङ्गा ॥
वंशीवट गोकुल धीरसमीर । वृन्दावन-तरुलतिका-वानीर ॥
खग-मृगकुल मलय-वातास । मयूर भ्रमर मुरली-विलास ॥
वेणु शृङ्ग पदचिन्ह मेघमाला । वसन्त शशाङ्क शङ्ख करताला ॥
युगलविलासे अनुकूल जानि । लीलाविलास उद्दीपक मानि ॥
ए सब छोड़त काँहा नाहि जाँउ । ए सब छोड़त पराण हाराँउ ॥
भकतिविनोद कहे शुन कान । तुया उद्दीपक हामारा पराण ॥

[३२]

हरि हरि ! कवे हव वृन्दावनवासी ।
निरखिव नयने युगल-रूपराशि ॥
त्यजिया शयन सुख विचित्र पालङ्क ।
कवे ब्रजेर धूलाय धसर हबे अङ्ग ॥
षड्रस भोजन दूरे परिहरि ।
कबे ब्रजे मागिया खाइब माधुकरी ॥
परिक्रमा करिया वेड़ाब बने बने ।
विश्राम करिब जाइ यमुना पुलिने ॥
ताप दूर करिब शीतल वन्शीवटे ।
(कबे)कुञ्ज -बैठव हाम वैष्णव-निकटे ॥
नरोत्तमदास कहे करि परिहार ।
कवे वा एमन दशा हइबे आमार ॥

(३२) वेड़ाब = भ्रमण करूंगा ।

[३३]

राधा कृष्ण सेवों मुंइ जीवने मरणे ।
ताँर स्थान ताँर लीला देखो रात्रि दिने ।।
जे स्थाने जे लीला करे युगल किशोर ।
सखीर सङ्गिनी हइया ताहे हङ भोर ।।
श्रीरूप मञ्जरी पद सेवों निरवधि ।
ताँर पादपद्म मोर मन्त्र महौषधि ।।
श्रीरति मञ्जरि देवि ! मोरे कर दया ।
अनुक्षण देह तुया पादपद्म छाया ।।
श्रीरस मञ्जरी देवि ! कर अवधान ।
अनुक्षण देह तुया पाद पद्म ध्यान ।।
वृन्दावने नित्य नित्य युगल विलास ।
प्रार्थना करये सदा नरोत्तमदास ।।

(३३) ताँर = उनका, जे = जिस ।

हिन्दी कीर्तन

[३४]

गुरु-चरणकमल भज मन ।
गुरु-कृपा बिना नाहि कोइ साधन-बल
भज मन भज अनक्षण ।।गुरु०।।
मिलता नहीं ऐसा दुर्लभ जनम,
भ्रमत हूं चौदह भुवन ।
किसी को मिलते हैं अहो भाग्य से,
हरिभक्तों के दरशन ।।गुरु०।।
कृष्ण–कृपा की आनन्द मूर्ति,
दीनजन करुणा निदान ।
भक्ति भाव प्रेम तीन प्रकाशत,
श्रीगुरु पतित पावन ।।गुरु०।।
श्रुति स्मृति और पुरानन माहिं,
कीनो स्पष्ट प्रमाण ।
तन मन जीवन, गुरु पदे अर्पण,
श्री हरिनाम रटन ।।गुरु०।।

[३५]

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द ।
श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादि श्रीगौरभक्तवृन्द ।।

[३६]

जय शचीनन्दन जय गौरहरि ।
विष्णुप्रिया प्राणधन नदीया बिहारी ।।

जय शचीनन्दन गौर गुणाकर ।
प्रेम परशमणि भावरस सागर ।।

[३७]

जय माधव मदनमुरारी, राधेश्याम श्यामाश्याम ।
जय केशव कलिमलहारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ।।

सुन्दर कुण्डल नयन विशाला, गल सोहे वैजन्तीमाला ।
या छबि की बलिहारी ।। राधेश्याम०

कबहुँ लूट लूट दधि खायो, कबहूँ मधुवन रास रचायो ।
नृत्यति विपिनविहारी ।। राधेश्याम०

ग्वालबाल सङ्ग धेनु चराई, वन वन भ्रमत फिरे यदुसई ।
काँधे कामर कारी ।। राधेश्याम०

चुरा चुरा नवनीत जो खायो, व्रज-वनितन पै नाम धरायो ।
माखन चोर मुरारि ।। राधेश्याम०

एकदिन मान इन्द्र को मार्‌यो, नख ऊपर गोवर्धन धार्‌यो ।
नाम पड्यो गिरिधारी ।। राधेश्याम०

दुर्योधन को भोग न खायो, रूखो साग विदुर घर खायो ।
ऐसे प्रेम-पुजारी ।। राधेश्याम०

करुणा कर द्रौपदी पुकारी, पट में लिपट गये बनवारी ।
निरख रहे नर नारी ।। राधेश्याम०

भक्त भक्त सब तुमने तारे, बिना भक्ति हम ठाड़े द्वारे ।
लीजो खबर हमारी ।। राधेश्याम०

अर्जुन के रथ हाँकन हारे, गीता के उपदेश तुम्हारे ।
चक्र-सुदर्शनधारी ।। राधेश्याम०

[३८]

व्रज-जन मन सुखकारी ।
राधे-श्याम श्यामा श्याम ॥

मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, गल वैजयन्ती माल ।
चरणन नूपुर रसाल ॥राधे०॥

सुन्दर वदन कमल दल लोचन, बाँकी चितवनहारी ।
मोहन वंशीविहारी ॥राधे०॥

वृन्दावन में धेनु चरावे, गोपीजन मनहारी ।
श्रीगोवर्धन धारी ॥राधे०॥

राधा-कृष्ण मिलि अब दोऊ, गौर रूप अवतारी ।
कीर्तन धर्म प्रचारी ॥राधे०॥

तुम बिन मेरे और न कोई, नाम रूप अवतारी ।
चरणन में बलिहारी ॥राधे०॥

[३९]

भज गोविन्द, भज गोविन्द, भज गोविन्द का नाम रे ।
गोविन्द के नाम बिना, तेरे कोई न आवे काम रे ॥

ये जीवन है सुख दुःख का मेला,
दुनियादारी स्वपन का खेला ।
जाना तुझको पड़ेगा अकेला,
भज ले हरि का नाम रे ॥

गोविन्द की महिमा गाके,
प्रेम के उस पर फाग लगाके ।
जीवन अपना सफल बना ले,
चल ईश्वर के धाम रे ॥

[४०]

जय गोविन्द, जय गोपाल, केशव, माधव, दीनदयाल ।
श्यामसुन्दर कन्हैयालाल, गिरवरधारी नन्ददुलाल ॥
अच्युत, केशव, श्रीधर, माधव, गोपाल गोविन्द, हरि ।
यमुना पुलिन में वंशी बाजाओये, नटवर वेशधारी ॥

[४१]

सुन्दर लाला शचीर-दुलाला, नाचत श्रीहरि-कीर्तन में ।
भाले चन्दन तिलक मनोहर, अलका शोभे कपाल में ॥
शिरे चूड़ा दरशीवाले, वन फुलमाला हिया पर दोले ।
पहिरण पीत-पटाम्बर शोभे, नूपुर रुणुझुनु चरणन में ॥
कोई गायत राधा-कृष्णनाम, कोई गायत है हरिगुण गान ।
मदङ्ग ताल-मधुर रसाल, कोई गायत है रङ्ग में ॥
सुन्दर लाला शचीर-दुलाला, नाचत श्रीहरि कीर्तन में ।

[४२]

बसो मेरे नयनन में नन्दलाल ।
मोहन मूरति, श्यामरी सूरति, नयना बने विशाल ॥
अधर सुधारस, मुरली बाजत उर वैजन्तोमाल ।
क्षुद्र घन्टिका कटितट शोभित, नूपुर शब्द रसाल ॥
मोरा प्रभु सन्तन सुखदायो, भकत-वत्सल गोपाल ॥

[४३]

पार करेंगे नैया रे, भज कृष्ण कन्हैया,
कृष्ण कन्हैया दाऊजी के भैया ।
कृष्ण कन्हैया बंशी बजैया,
माखन चुरैया रे, भज कृष्ण कन्हैया ॥

कृष्ण कन्हैया गिरिवर उठैया,
कृष्ण कन्हैया रास रचैया ।
पार करेंगे नैया रे, भज कृष्ण कन्हैया ॥
मित्र सुदामा तण्डुल लाए,
गले लगा प्रभु भोग लगाये ।
कहाँ कहाँ कह भैया रे, भज कृष्ण कन्हैया ॥
अर्जुन का रथ रण में हाँका,
श्यामलिया गिरिधारी बाँका ।
कालीनाग नथैया रे, भज कृष्ण कन्हैया ॥
द्रुपद - सुता जब दुष्टन घेरी,
राखी लाज न कोनी देरी ।
आगे चीर बढैया रे, भज कृष्ण कन्हैया ॥

[४४]

अब तो हरिनाम लौ लागी ।
सब जग को यह माखन चोरा, नाम धर्यो बैरागी ॥
कित छोड़ी वह मोहन मुरली, कित छोड़ी सब गोपी ।
मूंड़ मुड़ाई डोरि कटि बाँधी, माथे मोहन टोपी ॥
मात यशोमति माखन कारण, बाँधे जाके पाँव ।
श्यामकिशोर भयो नव गोरा, चैतन्य जाको नाँव ॥
पीताम्बर को भाव दिखावे, कटि कोपीन कसे ।
गौर - कृष्ण की दासी मीरा, रसना कृष्ण बसे ॥

[४५]

मदन गोपाल शरण तेरी आयो ।
चरण कमल की सेवा दीजो,
चेरो करि राखो घर जायो ॥

धन्य धन्य मात पिता सुत बन्धू,
धन्य जननी जिन् गोद खिलायो ।
धन्य धन्य चरण चलत तीर्थ को,
धन्य गुरु जिन् हरिनाम सुनायो ॥
जे नर विमुख भये गोविन्द सों,
जन्म अनेक महादुःख पायो ।
'श्रीभट्ट' के प्रभु दियो अभय-पद,
यम डरप्यो जब दास कहायो ॥

[४६]

हमारे ब्रज के रखवाले, कन्हैया राधिकारानी ।
कन्हैया राधिकारानी, कन्हैया राधिकारानी ॥
हमारे नयनों के तारे, कन्हैया राधिकारानी ।
सहारा बे-सहारों के, कन्हैया राधिकारानी ॥

[४७]

आली ! म्हांने लागे वृन्दावन नीको,
घर घर तुलसी, ठाकुर पूजा, दर्शन गोविन्दजी को ।
आली ! म्हांने लागे वृन्दावन नीको ॥
निर्मल नीर बहत यमुना को, भोजन दूध दही को ।
आली ! म्हांने लागे वृन्दावन नीको ॥
रत्न सिंहासन आप विराजे, मुकुट धर्‌यो तुलसी को ।
आली ! म्हांने लागे वृन्दावन नीको ॥
कुञ्जन कुञ्जन रहत राधिका, शब्द सुनत मुरली को ।
आली ! म्हांने लागे वृन्दावन नीको ॥
मीरा के प्रभु गिरधरनागर, भजन बिना नर फीको ।
आली ! म्हांने लागे वृन्दावन नीको ॥

[४८]

जय मोर मुकुट पीताम्बरधारी ।
जय मुरलीधर गोवर्धनधारी ॥
श्रीराधावर कुञ्जबिहारी, मुरलीधर गोवर्धनधारी ।
जय यशोदानन्दन कृष्ण मुरारी, मुरलीधर गोवर्धनधारी ॥
जय गोपीजनवल्लभ वंशीबिहारी, मुरलीधर गोवर्धनधारी ॥

[४९]

अच्युतं, केशवं, राम, नारायणं,
कृष्ण दामोदरं वासुदेवं भजे ।
श्रीधरं, माधवं, गोपिका वल्लभं,
जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे ।
राधिका नायकं कृष्णचन्द्रं भजे ॥

[५०]

छाँड़ि मन, हरि-बिमुखन को संग ।
जिनके सङ्ग कुबुधि उपजति है, परत भजन में भंग ॥
कहा होत पय पान कराये, विष नहिं तजत भुजंग ।
कागहि कहा कपूर चुगाये, स्वान न्हवाये गंग ॥
खरको कहा अरगजा-लेपन, मरकट भूषन अंग ।
गजको कहा न्हवाये सरिता, बहुरि धरै खहि छंग ॥
पाहन पतित बाँस नहीं बेधत, रीतो करत निषंग ।
सूरदास खल कारो कामरि, चढ़त न दूजो रंग ॥

[५१]

मधुकर स्याम हमारे चोर ।
मन हर लियो माधुरी मूरत निरख नयनकी कोर ॥
पकरे हुते आन उर अन्तर प्रेम प्रीतिके जोर ।
गये छुड़ाय तोर सब बन्धन दै गये हँसन अकोर ॥

उचक परों जागत निसि बीते तारे गिनत भई भोर ।
सूरदास प्रभु हत मन मेरो सरबस लै गयो नन्दकिसोर ॥

[५२]

निसिदिन बरसत नैन हमारे ।
सदा रहत पावस ऋतु हमपर, जबतें स्याम सिधारे ॥
अञ्जन थिर न रहत अंखियनमें, कर कपोल भये कारे ।
कंचुकि पट सूखत नहिं कबहूं, उर बिच बहत पनारे ॥
आँसू सलिल भये पग थाके, बहे जात सित तारे ।
सूरदास अब डूबत है ब्रज, काहे न लेत उबारे ॥

[५३]

हरि से बड़ा हरि का नाम, प्रभु से बड़ा प्रभु का नाम
अन्त में निकला ये परिणाम ।
सुमिरो नाम रूप बिन देखे, कौड़ी लगे न दाम ॥
नाम के बाँधे खिंच आयेंगे, आखिर इक दिन श्याम ।
द्रोपदी ने जब नाम पुकारा, झट आगए घनश्याम ॥
साड़ी खैंचत हारा दुःशासन, साड़ी बढ़ाई श्याम ।
जल डूबत गजराज पुकारो, आये आधे नाम ॥
नामी को चिन्ता रहती है, नाम न हो बदनाम ।
जिस सागर को लांघ सके ना, बिनाहि पुलके राम ॥
कूद गए हनुमान उसी को, लेके हरि का नाम ।
वो दिल वाले डूब जाएंगे, जिनमें नहीं है नाम ॥
वो पत्थर भी तरेंगे जिन पर, लिखा राम का नाम ।
हरि से बड़ा हरि का नाम, प्रभु से बड़ा प्रभु का नाम ॥

[५४]

हे कृष्ण हे यादव हे सखेति, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
डारि मथानी दधि में किसी ने, तब ध्यान आयो दधि चोर काहि ।।
गद-गद कंठ पुकारती है, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति, गोविन्द दामोदर माधवेति ।।
है लीपती आँगन नारि कोई, गोविन्द आवे मम् गृह खेले ।
ध्यानस्थ में यही पद गा रही है, गोविन्द दामोदर माधवेति ।।
माता यशोदा हरि को जगावे, जागो उठो मोहन नैन खोलो ।
द्वारे खड़े ग्वाल बुला रहे हैं, गोविन्द दामोदर माधवेति ।।
विद्या अनुरागी निज पुस्तकों में, अर्थ अनुरागी धन संचयों में ।
ये ही निराली ध्वनि गा रहे हैं, गोविन्द दामोदर माधवेति ।।
ले के करों में दोहनि अनोखी, गौ दुग्ध काढ़े अबला नवेली ।
गौ दुग्ध धारा सग गा रही है, गोविन्द दामोदर माधवेति ।।
जागे पुजारी हरि मन्दिरों में, जाके जगावें हरि को सवेरे ।
हे क्षीरसिन्धु अब नेत्र खोलो, गोविन्द दामोदर माधवेति ।।
सोया किसी का सुत पालने में, डोरी करों से जब खेंचती है ।
हो प्रेम मग्ना उसने पुकारा, गोविन्द दामोदर माधवेति ।।
रोया किसी का सुत पालने में, हो प्रेम मग्ना उसने पुकारा ।
रोवो न गावो प्रभु संग मेरे, गोविन्द दामोदर माधवेति ।।
कोई नवेली पति को जगावे, प्राणेश जागो अब नींद त्यागो ।
बेला यही है हरि गीत गावो, गोविन्द दामोदर माधवेति ।।

—o—

[५५]

जय राधे जय राधे राधे, जय राधे जय श्रीराधे ।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण, जय कृष्ण जय श्रीकृष्ण ॥
श्यामा गौरी नित्यकिशोरी, प्रीतमजोरी श्रीराधे ।
रसिक रसीलो छैलछबीलो, गुनगरवीलो श्रीकृष्ण ॥
रासविहारिनि रसविस्तारिनि पियउरधारिनि श्रीराधे ।
नव-नवरंगी नवलत्रिभंगी, श्यामसुअङ्गी श्रीकृष्ण ॥
प्राणपियारी रूपउजारी, अतिसुकुमारी, श्रीराधे ।
मैन मनोहर महामोदकर, सुन्दरवरतर श्रीकृष्ण ॥
शोभाश्रेनी मोहामैनी, कोकिलबैनी श्रीराधे ।
कीरतिवन्ता कामिनिकन्ता, श्रीभगवन्ता, श्रीकृष्ण ॥
चन्दावदनी कुन्दारदनी, शोभासदनी श्रीराधे ।
परम उदारा प्रभा अपारा, अतिसुकुमारा श्रीकृष्ण ॥
हंसागमनी राजतरमनी, क्रीड़ा कमनी श्रीराधे ।
रूपरसाला नयनविशाला, परमकृपाला श्रीकृष्ण ॥
कंचनबेली रतिरसरेली, अति अलबेली श्रीराधे ।
सब सुख सागर सब गुनआगर रूप उजागर श्रीकृष्ण ॥
रमणीरम्या तरुतरतम्या, गुण आगम्या श्रीराधे ।
धामनिवासी प्रभाप्रकाशी, सहज सुहासी श्रीकृष्ण ॥
शक्त्याह्लादिनि अतिप्रियवादिनि, उरउन्मादिनि श्रीराधे ।
अङ्ग-अङ्ग टोना सरससलोना, सुभगसुठोना श्रीकृष्ण ।
राधानामिनि गुणअभिरामिनि, श्रीहरिप्रियास्वामिनी श्रीराधे ।
हरे हरे हरि हरे हरे हरि, हरे हरे हरि श्रीकृष्ण ॥

—०—

श्रीनाम-ध्वनियाँ

१ जयशचीनन्दन जयगौरहरि विष्णुप्रिया प्राणधन ,नदियाबिहारी ।
२ जय शचीनन्दन गौरगुणाकर। प्रेम पारसमणि भावरससागर ॥
३ जय श्रीराधे जय नन्दनन्दन, जय जय गोपीजन-मन-रञ्जन ।
४ जय गोविन्द, जय गोपाल, केशव, माधव, दीनदयाल ।
५ श्यामसुन्दर कन्हैयालाल, गिरिवरधारी नन्ददुलाल ।
६ गोविन्द जय जय गोपाल जय जय ।
राधारमण हरि गोविन्द जय जय ॥
७ श्रीराधावल्लभ कुञ्जबिहारी, मुरलीधर गोवर्धनधारी ।
८ श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव ॥
९ राधे राधे राधे, जय जय जय श्रीराधे ।
१० राधे राधे गोविन्द, गोविन्द राधे ।
११ मयूर मकुट पीताम्बरधारी, मुरलीधर गोवर्धनधारी ।
१२ निताई गौराङ्ग जय जय निताइ गौराङ्ग ॥
१३ बोल हरि बोल हरि हरि हरि बोल, केशव माधव गोविन्द बोल ।
१४ श्यामसुन्दर मदनमोहन – वृन्दावनविहारी ।
हरि वृन्दावनविहारी गोवर्धन गिरिधारी ॥
१५ नन्द के आनन्द भयो, जय कन्हैयालाल की ।
१६ जय श्रीश्यामा, जय श्रीश्यामा, जय जय श्रीवृन्दावनधाम ।

—०—

आरती कीर्तन

[५६]

श्रीगुरुदेव की आरती

जय जय गुरुदेव भकति प्रज्ञान ।
परम मोहन रूप आर्त्त-विमोचन ॥
मूर्त्तिमन्त श्रीवेदान्त अशुभनाशन ।
"भक्ति ग्रन्थ श्रीवेदान्त" तब विघोषण ॥
वेदान्त समिति-दीपे श्रीसिद्धान्त-ज्योति ।
आरति तोमार ताहे हय निरवधि ॥
श्रीविनोदधारा-तैले दीप प्रपूरित ।
रूपानुग-धूपे दशदिक् आमोदित ॥
सर्वशास्त्र-सुगम्भीर करुणा-कोमल ।
युगपत् सुशोभन वदन-कमल ॥
स्वर्णकान्ति विनिन्दित श्रीअङ्ग शोभन ।
यतिवास परिधाने जगत्-कल्याण ॥
नाना छाँदे सज्जन चामर ढुलाय ।
गौरजन उच्चकण्ठे सुमधुर गाय ॥
सुमंगल नीराजन करे भक्तगण ।
दूरमति दूर हैते देखे त्रिविक्रम ॥

(५६) आर्त विमोचन=दुःखहारी, विघोषण=घोषणा, यतिवास=संन्यासी वेश, छाँदे = भाव भङ्गिमा से ।

[५७]

मंगलारति

मंगल श्रीगुरु-गौर मंगल मूरति ।
मंगल श्रीराधाकृष्ण युगल पीरिति ॥१॥

मंगल निशान्त लीला मगल उदये ।
मंगल आरति जागे भकत हृदये ॥२॥

तोमार निद्राय जीव निद्रित धराय ।
तव जागरणे विश्व जागरित हय ॥३॥

शुभ दृष्टि कर प्रभु जगतेर प्रति ।
जागुक हृदये मोर सुमंगला रति ॥४॥

मयूर शुकादि सारि कत पिकराज ।
मंगल जागर हेतु करिछे विराज ॥५॥

सुमधुर ध्वनि करे जत शाखीगण ।
मंगल श्रवणे बाजे मधुर कूजन ॥६॥

कुसुमित सरोवरे कमल-हिल्लोल ।
मंगल सौरभ वहे पवन कल्लोल ॥७॥

झाँझर काँसर घण्टा शङ्ख करताल ।
मंगल मृदङ्ग बाजे परम रसाल ॥८॥
मंगल आरति करे भकतेर गण ।
अभागा केशव करे नाम-संकीर्त्तन ॥९॥

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द ।
श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादि गौर भक्तवृन्द ॥१०॥

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥

[५८]

श्रीगौरसुन्दरकी सन्ध्या आरति

जय जय गोराचाँदेर आरति को शोभा ।
जाह्नवी तटवने जगमन लोभा ॥
दक्षिणे निताइ चाँद वामे गदाधर ।
निकटे अद्वैत श्रीनिवास छत्रधर ॥
बसियाछे गोराचाँद रत्न-सिंहासने ।
आरति करेन ब्रह्मा-आदि देवगणे ॥
नरहरि आदि करि चामर ढुलाय ।
सञ्जय मुकुन्द वासु-घोष आदि गाय ॥
शङ्ख बाजे घण्टा बाजे, बाजे करताल ।
मधुर मृदङ्ग बाजे परम रसाल ॥
बहु कोटि चन्द्र जिनि वदन उज्ज्वल ।
गलदेशे वनमाला करे झलमल ॥
शिव - शुक नारद प्रेमे गदगद ।
भकति - विनोद देखे गोरार सम्पद ॥

[५९]

श्रीयुगलकी सन्ध्या आरति

जय जय राधाकृष्ण युगल - मिलन ।
आरति करये ललतादि सखीगण ॥
मदन - मोहन रूप त्रिभङ्ग सुन्दर ।
पीताम्बर शिखिपुच्छ चूड़ा मनोहर ॥
ललित माधव वामे वृषभानु कन्या ।
नील - वसना गौरी रूपे गुणे धन्या ॥

नानाविध अलंकार करे झलमल ।
हरिमन - विमोहन वदन उज्ज्वल ॥
विशाखादि सखीजत नाना रागे गाय ।
प्रियनर्म सखीजत चामर ढुलाय ॥
श्रीराधा - माधव - पद सरसिज आशे ।
भकति विनोद सखी - पदे सुखे भासे ॥

[६०]

श्रीमति राधिकाजी की आरति

जय जय राधाजी को शरण तोंहारि ।
ऐछन आरति जाउँ बलिहारी ॥
पाट पटाम्बर उड़े नील शाड़ी ।
सिंथिपर सिन्दुर जाइ बलिहारी ॥
वेश बनाउत प्रिय सहचरी ।
रतन सिंहासने बैठल गौरी ॥
रतन जड़ित मणि माणिक मोति ।
झलकत आभरण प्रति अङ्गे ज्योति ॥
चुया चन्दन अङ्गे देइ ब्रजबाला ।
कत कोटि चन्द्रजिनि वदन उजाला ॥
चौदिके सखिगण देय करतालि ।
आरति करतहिं ललिता पियारी ॥
नव - नव ब्रजवधू मंगल गाउये ।
प्रिय नर्मसखिगण चामर ढुलाउये ॥
राधापद पंकज सेवनकि आशा ।
दास मनोहर करत भरोसा ॥

— ० —

[६१]

श्रीतुलसी परिक्रमा एवं आरति

(ब्रज)

'नमो नमः तुलसी कृष्ण-प्रेयसी' (नमो नमः)।
राधाकृष्ण नित्यसेवा–'एइ अभिलाषी' ॥१॥
'जे तोमार शरण लय', सेइ कृष्ण सेवा पाय,
कृपा करि कर तारे 'वृन्दावनवासी'।
तुलसी कृष्ण प्रेयसी (नमो नमः) ॥२॥
तोमार चरणे धरि, मोरे अनुगत करि,
गौरहरि-सेवा-मग्न राख दिवा निशि ।
तुलसी कृष्ण-प्रेयसी (नमो नमः) ॥३॥
दीनेर एइ अभिलाष, मायापुरे/नवद्वीपे दिओ वास,
अंगेते माखिब सदा धाम धलि राशि ।
तुलसी कृष्ण-प्रेयसी (नमो नमः) ॥४॥
तोमार आरति लागि, धूप, दीप, पुष्प माँगि,
महिमा बाखानि एबे हउ मोरे खुशी।
तुलसी कृष्ण-प्रेयसी (नमो नमः) ॥५॥
जगतेर जत फूल, कभु नहे समतुल,
सर्वत्यजि कृष्ण तव पत्र मञ्जरी विलासी ।
तुलसी कृष्ण प्रेयसी (नमो नमः) ॥६॥
ओगो वृन्दे महारानी !
तोमार पादप तले, देव ऋषि कुतूहले,
सर्वतीर्थ लये ताँरा हन अधिवासी ।
तुलसी कृष्ण प्रेयसी (नमो नमः) ॥७॥
श्रीकेशव अति दीन, साधन–भजन–हीन,
तोमार आश्रये सदा नामानन्दे भासि ॥
तुलसी कृष्ण-प्रेयसी (नमो नमः) ॥८॥

[६२]

(ख)

नमो नमः तुलसी कृष्णप्रेयसी नमो नमः ।
(ब्रजे) राधाकृष्ण-पद सेवा एइ अभिलाषी ॥
जे तोमार शरण लय, तार बांछा पूर्ण हय ।
कृपा करि करे तारे वृन्दावनवासी ॥
मोर एइ अभिलाष, विलासकुञ्जे दिओ बास ।
नयने हेरिब सदा युगलरूप-राशि ॥
एइ निवेदन धर, सखीर अनुगत कर ।
राधाकृष्ण सेवा दिया कर निजदासी ॥
दीन कृष्णदास कय, मोर जेन एइ हय ।
श्रीराधागोविन्द-प्रेमे सदा जेन भासि ॥

[६३]

भोग आरति

(क)

भज भकत वत्सल श्रीगौरहरि ।
श्रीगौरहरि सोहि गोष्ठ बिहारी,
नन्द यशोमती-चित्तहारी ॥
बेला हलो दामोदर आईस एखन ।
भोग-मन्दिरे बसि करह भोजन ॥
नन्देर निदेशे बैसे गिरिवरधारी ।
बलदेव सह सखा बैसे सारि सारि ॥
शकता-शाकादि भाजि नालिता कुष्माण्ड ।
डालि डाल्ना दुग्ध तुम्बी दधि मोचाखण्ड ॥

मुद्गबड़ा माषबड़ा रोढिका घृतान्न।
शष्कुली पिष्टक क्षीर पुलि पायसान्न॥
कर्पूर अमृतकेलि रम्बा क्षीरसार।
अमृत रसाला अम्ल द्वादश प्रकार॥
लुचि चिनि सरपुरी लाड्डु रसावली।
भोजन करेन कृष्ण हये कुतूहली॥
राधिकार पक्क अन्न विविध व्यञ्जन।
परम आनन्दे कृष्ण करेन भोजन॥
छले बले लाड्डु खाय श्रीमधुमङ्गल।
बगल बाजाय आर देय हरिबोल॥
राधिकादि गणे हेरि नयनेर कोणे।
तृप्त हये खाये कृष्ण यशोदा भवने॥
भोजनान्ते पिये कृष्ण सुवासित वारि।
सबे मुख प्रक्षालय हये सारि सारि॥
हस्त मुख प्रक्षालिया जत सखागणे।
आनन्द विश्राम करेन बलदेव सने॥
जाम्बुल रसाल आने ताम्बूल मसाला।
ताहे खेये कृष्णचन्द्र सुखे निद्रा गेला॥
विशालाक्ष शिखि पुच्छ चामर ढुलाय।
अपूर्व शय्याय कृष्ण सुखे निद्रा जाय॥
यशोमती आज्ञा पेये धनिष्ठा-आनीत।
श्रीकृष्णप्रसाद राधा भुञ्जे हये प्रीत॥
ललितादि सखीगण अवशेष पाय।
मने मने सुखे राधा-कृष्ण गुण गाय॥
हरिलीला एकमात्र जाँहार प्रमोद।
भोगारति गाय सेइ भकति विनोद॥

[६४]

(ख)

आज हरि आये विदुर-घर पावना।
विदुर नहीं, घर थी विदुरानी, आवत देखे सारंगपाणी
फूली अङ्ग समावे नाहीं, भोजन कहाँ जिमावना ॥आज०
केला बड़े प्रेम से लाई, गिरि गिरि सब देत गिराई।
छिलका देत श्याममुख माँहि, रुचि-रुचि भोग लगावना ॥आज०
इतने में विदुर घर आये, खोटे खारे वचन सुनाये।
छिलका देत श्याम मुख माँहि, कहाँ गई तेरी भावना ॥आज०
केला लिए विदुर कर माँहि, गिरि देत गिरिधर मुख माँहि।
कहे कृष्णजी सुनो विदुरजी, वो स्वाद नहीं आवना ॥आज०
बासी खूसी रूखे सूखे, हम तो विदुरजी प्रेमके भूखे।
शम्भु सखी कहे धन विदुरानी, भक्तों का मान बढ़ावना ॥आज०

[६५]

महाप्रसाद कीर्तन

महाप्रसादे गोविन्दे नाम-ब्रह्मणि वैष्णवे।
स्वल्पपुण्यवतां राजन् विश्वासो नैव जायते॥

शरीर अविद्या जाल, जड़ेन्द्रिय ताहे काल,
जीवे फेले विषय-सागरे।
तार मध्ये जिह्वा अति, लोभमय सुदुर्मति,
ताके जेता कठिन संसारे॥
कृष्ण बड़ दयामय, करिबारे जिह्वा जय,
स्वप्रसाद-अन्न दिला भ
सेइ अन्नामृत पाओ, ण-गुण गाओ,
प्रेमे डाक चैतन्य-निताइ॥

—०—

संस्कृत गीति

[६६]

श्रीमङ्गलगीतम्

श्रितकमलाकुचमण्डल ! धृतकुण्डल ! ए ।
कलितललितवनमाल ! जय जय देव ! हरे ॥१॥
दिनमणिमण्डलमण्डन ! भवखण्डन ए ।
मुनिजनमानसहंस ! जय जय देव ! हरे ॥२॥
कालियविषधरगञ्जन ! जनरञ्जन ! ए ।
यदुकुलनलिनदिनेश ! जय जय देव ! हरे ॥३॥
मधुमुरनरक-विनाशन ! गरुडासन ! ए ।
सुरकुलकेलिनिदान ! जय जय देव ! हरे ॥४॥

हे कमलाके अर्थात् सर्वलक्ष्मीमयी श्रीराधिकाके पयोधर मण्डलका आश्रय लेनेवाले ! हे मकराकृति कुण्डल धारण करने वाले ! एवं मनोहर वनमाला धारण करने वाले ! देव ! हरे ! तुम्हारी बारम्बार जय हो ॥१॥

हे सूर्य मण्डलको विभूषित करनेवाले ! भवबन्धन को छेदन करनेवाले ! अतएव मननशील मुनिजनोंके मन रूप सरोवरमें विहरण करनेवाले हंसस्वरूप ! देव ! हरे ! तुम्हारी बारम्बार जय हो ॥२॥

हे कालियनागके मदका मर्दन करनेवाले ! अतएव ब्रजजनोंका मनोरंजन करनेवाले ! एवं यदुकुलरूप कमलको विकसित करनेके लिए सूर्यस्वरूप देव ! हरे ! तुम्हारी बारम्बार जय हो ॥३॥

हे मधु दैत्य, मुर दैत्य एवं नरकासुरका विनाश करनेवाले ! गरुण पर बैठनेवाले ! अतएव देवगणों की क्रीड़ाके आदिकारणस्वरूप ! देव ! हरे ! तुम्हारी बारम्बार जय हो ॥४॥

अमलकमलदललोचन ! भवमोचन ! ए ।
त्रिभुवनभवननिधान ! जय जय देव ! हरे ॥५॥
जनकसुताकृतभूषण ! जितदूषण ! ए ।
समरशमितदशकण्ठ ! जय जय देव ! हरे ॥६॥
अभिनवजलधरसुन्दर ! धृतमन्दर ! ए ।
श्रीमुखचन्द्रचकोर ! जय जय देव ! हरे ॥७॥
तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए ।
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव ! हरे ॥८॥
श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदम् ।
मङ्गलमुज्ज्वलगीतं जय जय देव ! हरे ॥९॥

हे निर्मल कमलदलके समान विशाल नेत्रोंवाले ! संसारसे विमुक्त करनेवाले ! अतएव त्रिभुवनरूप भवनके आधार-स्वरूप ! देव ! हरे ! तुम्हारी बारम्बार जय हो ॥५॥

हे रामावतारमें जानकीको विभूषित करनेवाले ! दूषण नामक राक्षसको जीतनेवाले तथा युद्धमें रावणको शान्त करनेवाले ! देव ! हरे ! तुम्हारी बारम्बार जय हो ॥६॥

हे नवीन जलधरके समान वर्णवाले श्यामसुन्दर ! मन्दराचलको धारण करनेवाले ! तथा श्रीराधारूप महालक्ष्मीके मुखरूप चन्द्रपर आसक्त रहनेवाले चकोरस्वरूप ! देव ! हरे ! तुम्हारी बारम्बार जय हो ॥७॥

हे जयदेव गोस्वामीके संकट हरनेवाले प्रभो ! हम सब भक्त, तुम्हारे श्रीचरणोंमें विनम्रभावसे पड़े हुए हैं, यह विचार लीजिए और अपने विनम्र-भक्तोंके विषयमें कल्याण विधान कीजिये ॥८॥

हे देव ! श्रीजयदेव कविके द्वारा विनिर्मित मङ्गलमय निर्मल यह गीत, तुम्हारी प्रसन्नताका सम्पादन करता रहे, अथवा श्रवण एवं गायन करनेवाले भक्तोंके लिए भी यह गीत हर्षित करता रहता है। अतएव हे देव ! हे हरे ! तुम्हारी बारम्बार जय हो, जय हो ॥९॥

[६७]

श्रीदशावतारस्तोत्रम्

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदं
विहितवहित्र-चरित्रमखेदम् ।
केशव ! धृतमीनशरीर ! जय जगदीश ! हरे ॥१॥
क्षितिरिह विपुलतरे तिष्ठति तव पृष्ठे
धरणिधरणकिण-चक्रगरिष्ठे ।
केशव ! धृतकूर्मशरीर ! जय जगदीश ! हरे ॥२॥
वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना
शशिनि कलङ्ककलेव निमग्ना ।
केशव ! धृतशूकररूप ! जय जगदीश ! हरे ॥३॥

हे केशव ! हे मीनका शरीर धारण करने वाले ! जगदीश ! हे भक्तोंका क्लेश हरनेवाले हरे ! तुम्हारी जय हो; क्योंकि प्रलयकालीन समुद्रके जलमें हयग्रीव-नामक दैत्यको मारकर वेदोंका उद्धार तो तुमने ही किया है एवं उसी समय सप्तर्षियोंके सहित सत्यव्रत-नामक राजर्षिको अनायास धारण करने के लिए, नौकाका सा चरित्र करनेवाले भी तो तुम ही हो ॥१॥

हे केशव ! हे कच्छपका शरीर धारण करनेवाले ! जगदीश ! हे भक्तों का मन हरनेवाले हरे ! तुम्हारी जय हो; क्योंकि इस कच्छप अवतारमें पृथ्वीके धारण करनेसे अथवा मन्दराचलके धारण करने से, सूखे व्रणसमूहसे अतिशय कठिन, एवं अत्यन्त विशाल तुम्हारे पृष्ठभागपर पृथ्वी स्थित है ॥२॥

हे केशव ! हे वराहका रूपधारण करनेवाले ! जगदीश ! हे भक्तोंका पाप हरनेवाले हरे ! तुम्हारी जय हो; क्योंकि तुम्हारे दाँतके अग्रभागमें संलग्न हुई पृथ्वी, चन्द्रमामें निमग्न कलङ्ककी कलाकी भाँति निवास करती है ॥३॥

तव करकमलवरे नखमद्भुतशृङ्गं
दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम् ।
केशव ! धृतनरहरिरूप ! जय जगदीश ! हरे ॥४॥

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन !
पदनखनीरजनितजनपावन ! ।
केशव ! धृतवामनरूप ! जय जगदीश ! हरे ॥५॥

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापं
स्नपयसि पयसि शमितभवतापम् ।
केशव ! धृतभृगुपतिरूप ! जय जगदीश ! हरे ॥६॥

हे केशव ! हे नृसिंहरूप धारण करनेवाले ! जगदीश ! हे भक्तोंका कष्ट हरनेवाले हरे ! तुम्हारी जय हो; क्योंकि तुम्हारे श्रेष्ठकरकमलमें अद्भुत अग्रभागवाला एक नख है, जिसने हिरण्यकशिपुके शरीररूप भ्रमरको विदीर्ण कर दिया। इसमें आश्चर्य की बात यह है कि साधारणतः कमलके अग्रभाग को भ्रमर ही विदीर्ण करता है; किन्तु यहां तो कमलके अग्रभाग ने ही भ्रमरको ही विदीर्ण कर डाला है ॥४॥

हे केशव ! हे वामनरूप धारण करनेवाले ! जगदीश ! हे भक्तोंका अहङ्कार हरनेवाले हरे ! तुम्हारी जय हो; क्योंकि तुम बलिराजके द्वारा दी हुई पृथ्वी को नापते समय, बलिराजा को छलते रहते हो, अतः अद्भुत वामन रूपवाले हो ! उसी समय तुम्हारे चरण-नखसे उत्पन्न हुए गङ्गाजलके द्वारा, तुम समस्तजनों को पवित्र बनाने वाले हो ॥५॥

हे केशव ! हे परशुरामका रूप धारण करनेवाले ! जगदीश ! हे संसारका सन्ताप हरनेवाले हरे ! तुम्हारी जय हो; क्योंकि ब्राह्मण-विरोधी क्षत्रियों के रुधिरमय जलमें (कुरुक्षेत्रमें), संसारभरको पाप एवं सन्तापरहित बनाते हुए, आज भी स्नान कराते रहते हो ॥६॥

हे केशव ! हे रामचन्द्रका विग्रह धारण करनेवाले ! जगदीश ! हे ऋषियों की व्यथा हरनेवाले हरे ! तुम्हारी जय हो; क्योंकि तुम रामा-

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयं
दशमुख—मौलिबलिं रमणीयम् ।
केशव ! धृतरामशरीर ! जय जगदीश ! हरे ॥७॥
वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं
हलहतिभीतिमिलित-यमुनाभम् ।
केशव ! धृतहलधररूप ! जय जगदीश ! हरे ॥८॥
निन्दसि यज्ञ विधेरहह श्रुतिजातं
सदयहृदय ! दर्शित-पशुघातम् ।
केशव ! धृतबुद्धशरीर ! जय जगदीश ! हरे ॥९॥

वतारमें लङ्काके रणाङ्गण में दशों दिक्पालों के द्वारा वांछनीय एवं रमणीय, रावणके मस्तकरूप उपहारको दशों दिशाओंमें वितरण करते रहते हो ॥७॥

हे केशव ! हे बलरामका रूप धारण करनेवाले ! जगदीश ! हे दुष्टोंका मद हरनेवाले हरे ! तुम्हारी जय हो; क्योंकि तुम बलराम अवतारमें गौरवर्ण वाले श्रीविग्रहमें, सजल-जलदके समान नीलाम्बर को धारण करते रहते हो, वह नीलाम्बर, हलके प्रहारसे भयभीत हुई, अतएव सम्मिलित हुई यमुनाके समान प्रतीत होता है ॥८॥

हे केशव ! ह बुद्धका शरीर धारण करनेवाले ! जगदीश ! हे पाषण्डका हरण करनेवाले हरे ! तुम्हारी जय हो; क्योंकि तुम दयासे युक्त हृदयवाले हो ! अतएव अहिंसारूप परमधर्मको माननेवाले हो ! अहह ! अतएव पशुओंकी हिंसाका प्रदर्शन करनेवाले, यज्ञविधि के श्रुति समुदायकी निन्दा करते रहते हो ॥९॥

हे केशव ! हे कल्कि शरीर धारण करनेवाले ! जगदीश कलिमल हरनेवाले हरे ! तुम्हारी जय हो; क्योंकि तुम, म्लेच्छ-समुदायको मारनेके लिए, दुष्टोंका विनाशसूचक धूमकेतु (पुच्छलतारा) की तरह अनिर्वचनीय कराल तलवारको धारण करते रहते हो ॥१०॥

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालं
धूमकेतुमिव किमपि करालम् ।
केशव ! धृतकल्किशरीर ! जय जगदीश ! हरे ॥१०॥
श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारं
शृणु सुखदं शुभदं भवसारम् ।
केशव ! धृतदशविधरूप ! जय जगदीश ! हरे॥११॥
वेदानुद्धरते जगन्ति वहते भूगोलमुद्बिभ्रते
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते ।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥१२॥

हे केशव ! हे दश-प्रकारके अवतार धारण करनेवाले ! जगदीश ! हे भक्तोंकी वासना हरनेवाले हरे ! तुम्हारी जय हो; तुम्हारे श्रीचरणोंमें मेरी यही विनम्र प्रार्थना है कि, श्रीजयदेव-कविके द्वारा कहे हुए, इस दशावतार स्तोत्रको तुम प्रेमपूर्वक सुनते रहो; क्योंकि यह स्तोत्र तुम्हारे अवतारोंके सारांशसे भरा हुआ है, अतएव सर्वश्रेष्ठ, सुखद और मङ्गल-कारी है ॥११॥

हे दश-अवतार धारण करनेवाले श्रीकृष्ण ! तुम्हारे लिए मेरा कोटिशः प्रणाम है; क्योंकि तुम मत्स्यरूपसे वेदोंका उद्धार करनेवाले हो, कूर्मरूपसे संसारको धारण करनेवाले हो, वराहरूपसे भूगोलको उठानेवाले हो, श्रीनृसिंहरूपसे हिरण्यकशिपु दैत्यको विदीर्ण करनेवाले हो, श्रीवामन-रूपसे बलिको छलनेवाले हो, श्रीपरशुरामरूपसे दुष्ट-क्षत्रियोंका संहार करनेवाले हो, श्रीराम-रूपसे रावणको जितनेवाले हो, श्रीबलरामरूपसे हलको धारण करनेवाले हो, श्रीबुद्धरूपसे जीवोंपर करुणाका विस्तार करने वाले हो और कल्किरूपसे म्लेच्छोंको मूर्च्छित करने वाले हो ॥१२॥

—o—

[६८]
श्रीगौर-गीति

मधुकर–रञ्जित- मालति–मण्डित–जितघन कुञ्चित केशम् ।
तिलक-विनिन्दित-शशधर-रूपक-भुवन-मनोहर-वेशम् ॥१॥
सखे, कलय गौरमुदारम् ।
निन्दित-हाटक -कान्ति -कलेवर गर्वितमारकमारम् ॥ २ ॥
मधु-मधुरस्मित – लोभित तनुभृतमनुपम-भाव-विलासम् ।
निधुवन नागरी मोहित-मानस -विकथित -गदगद भाषम् ॥३॥
परमाकिञ्चन–किञ्चन–नरगण–करुणा–वितरणशीलम् ।
क्षोभित–दुर्मति--राधामोहन-नामक-निरुपम्-लीलम् ॥४॥

भावार्थ– हे सखे ! परम औदार्यमयी लीलाका प्रकाश करनेवाले, अपनी अङ्गकान्तिसे तपाये हुए शुद्ध स्वर्ण-कान्तिका तिरस्कार करनेवाले और करोड़ों कामदेवके सौन्दर्यको भी मात करनेवाले श्रीशचीनन्दन गौर-हरिके मधुर नाम, रूप, गुण और लीलाओंका तुम गान करो ॥१॥

जो भौरोंके मधुर गुञ्जारसे अनुरंजित सुन्दर–सुगन्धित मालती-पुष्पोंकी मालासे सुशोभित हैं, जिनके काले-काले घुंघराले केशकी शोभा काले मेघोंकी छटाको भी परभूत करती है, जिनके तिलककी शोभा शशधर की शोभाको भी तुच्छ बना देती है तथा जिनका सुन्दर वेश त्रिभुवन के मनको भी हरण करनेवाला है, हे सखे ! तुम, उन श्रीशचीनन्दन गौर हरिके मधुर नाम, रूप, गुण और लीलाओंका ही गान करो ॥२॥

जिनके मन्द-मधुर मुस्कानसे तथा अनुपम भावरूपी विलासके द्वारा निखिल देह-धारियोंको लुब्ध कर रहे हैं, जिनका अन्तःकरण श्रीमती राधिकाके उन्नतोज्ज्वल प्रेममें विभावित है, जो उक्त दशामें प्रेममय गद्गद् वाणीसे श्रीकृष्णका गुणानुवाद कर रहे हैं, हे सखे ! तुम, उन श्रीशचीनन्दन गौरहरिके मधुर नाम, रूप, गुण और लीलाओंका प्रीति-पूर्वक गान करो ॥३॥

[६९]

श्रीनन्दनन्दनाष्टकम्

सुचारु-वक्त्रमण्डलं सुकर्ण- रत्नकुण्डलम् ।
सुचर्चिताङ्ग-चन्दनं नमामि नन्दनन्दनम् ॥१॥

सुदीर्घ नेत्रपङ्कजं शिखि-शिखण्ड-मूर्धजम् ।
अनङ्गकोटि-मोहनं नमामि नन्दनन्दनम् ॥२॥

सुनासिकाग्र-मौक्तिकं स्वच्छन्द दन्तपंक्तिकम् ।
नवाम्बुदाङ्ग-चिक्कणं नमामि नन्दनन्दनम् ॥३॥

जो परम सौभाग्यवान निष्किञ्चनजनोंको नाम-प्रेमदान रूपी कृपाका वितरण करने वाले हैं, उन महावदान्य श्रीगौरसुन्दरकी निरुपम लीलाओंका आस्वादन करनेके लोभसे, अत्यन्त दुर्बुद्धियुक्त होने पर भी यह राधामोहन नामक जन अत्यन्त व्याकुल होकर इस प्रकार वर्णन करता है ॥४॥

—०—

अर्थ—जिनका मुखमण्डल अत्यन्त सुन्दर है, जिनके सुन्दर कानोंमें रत्नजड़ित कुण्डल सुशोभित हो रहे हैं, जिनके सारे अङ्ग चन्दन-द्वार चर्चित (लिप्त) हैं, उन श्रीनन्दनन्दनको मैं प्रणाम करता हूँ ॥१॥

जिनके नेत्र प्रफुल्लित कमलके समान बड़े—बड़े और सुन्दर हैं, जिनके मस्तक पर मयूर-पंखोंका मनोहर चूड़ा सुशोभित हो रहा है, जो करोड़ों कामदेवको भी मोहित करनेवाले हैं, उन श्रीनन्दनन्दनको मैं पुनः पुनः प्रणाम करता हूँ ॥२॥

जिनकी सुन्दर नासिकाके अग्रभागमें गजमुक्ता शोभित है, जिनके दांतोंकी पंक्ति अत्यन्त उज्ज्वल है, जिनकी अङ्ग—कान्ति नवीन मेघसे भी

करेण वेणुरञ्जितं गती-करीन्द्रगञ्जितम् ।
दुकूल-पीत शोभनं नमामि नन्दनन्दनम् ॥४॥

त्रिभङ्ग-देह-सुन्दरं नखद्यु ति-सुधाकरम् ।
अमूल्य रत्न-भूषणं नमामि नन्दनन्दनम् ॥५॥

सुगन्ध-अङ्गसौरभमुरोविराजि-कौस्तुभम् ।
स्फुरच्छ्रीवत्सलाञ्छनं नमामि नन्दनन्दनम् ॥६॥

वृन्दावन-सुनागरं विलासानुग-वाससम् ।
सुरेन्द्रगर्व-मोचनं नमामि नन्दनन्दनम् ॥७॥

अधिक सुन्दर और सुचिक्कण है, उन श्रीनन्दनन्दनको मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ ॥३॥

जिनके कर-कमलोंमें वेणु विराजित है, जिनकी गमन-भङ्गी मत-वाले गजराजकी गतिका भी तिरस्कार करती है, जिनके श्याम अङ्गों पर पीताम्बर सुशोभित हो रहा है, उन श्रीनन्दनन्दनको मैं पुनः पुनः प्रणाम करता हूँ ॥४॥

जिनका त्रिभङ्ग ललित देह परम शोभायमान हो रहा है, जिनके पद-नखकी कान्ति चन्द्रको भी लज्जित कर रही है, जिन्होंने अमूल्य रत्न-भूषणोंको धारण कर रखा है, उन श्रीनन्दनन्दनको मैं बारम्बार प्रणाम करता हूं ॥५॥

जिनका श्रीअङ्ग सुन्दर सुगन्धसे परिपूर्ण है, जिनके विशाल वक्षः स्थल पर कौस्तुभ-मणि और श्रीवत्सलाञ्छन-चिन्ह सुशोभित हो रहे हैं, उन श्रीनन्दनन्दनको मैं पुनः पुनः प्रणाम करता हूं ॥६॥

जो वृन्दावनके सुनागर परम सुन्दर लीला करनेवाले हैं, जो विला-सानुरुप सुन्दर वस्त्र परिधान करते हैं, जो देवराज इन्द्रके गर्वको चूर्ण-विचूर्ण करने वाले हैं, उन श्रीनन्दनन्दनको मैं पुनः पुनः प्रणाम करता हूं ।

व्रजाङ्गना-सुनायकं सदा सुख-प्रदायकम् ।
जगन्मनः प्रलोभनं नमामि नन्दनन्दनम् ॥८॥
श्रीनन्दनन्दनाष्टकं पठेद् य श्रद्धयान्वितः ।
तरेद्भवाब्धिं दुस्तरं लभेत्तदंघ्रियुग्मकम् ॥९॥

जो व्रजाङ्गनाओंके सुनायक हैं, जो सर्वथा सुख प्रदान करनेवाले हैं, जो जगतके सभी प्राणियों (स्थावर और जङ्गम) के चित्तको मोहित करनेवाले हैं, उन श्रीनन्दनन्दनको मैं बारम्बार प्रणाम करता हूं ॥८॥

जो व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इस श्रीनन्दनन्दनाष्टक का पाठ करते हैं, वे इस दुस्तर भव-सागरको अनायास की तर कर श्रीकृष्णके श्रीचरणकमलों को प्राप्त कर लेते हैं ॥९॥

[७०]
गीतम्

राधे ! जय जय माधवदयिते !, गोकुल-तरुणीमण्डल-महिते ।
दामोदर-रतिवर्धन-वेशे !, हरिनिष्कुट-वृन्दाविपिनेशे ! ॥१॥
वृषभानूदधि-नवशशिलेखे !, ललितासखि ! गुणरमितविशाखे ! ।
करुणां कुरुमयि करुणाभरिते !, सनकसनातन-वर्णितचरिते ! ॥२॥

अर्थ-हे कृष्ण प्रेयसी ! श्रीमती राधिके ! आपकी बारम्बार जय-जयकार हो, क्योंकि आप व्रजके तरुणीमण्डलके द्वारा पूजित हो, एवं आपका वेष, श्रीकृष्ण की प्रीतिको बढ़ाने वाला है, तथा श्रीकृष्णके उपवनस्वरूप श्रीवृन्दावनकी आप अधीश्वरी हो ॥१॥

अपने पिता श्रीवृषभानुरूप-समुद्रसे उत्पन्न होने वाली नवीन चन्द्रलेखा हो, ललिताकी प्यारी सखि हो; सौहार्द-कारुण्य एवं श्रीकृष्णकी अनुकूलता आदि गुणों के द्वारा, विशाखाको आनन्दित करनेवाली हो, करुणासे परिपूर्ण हो, अतः मेरे ऊपर भी करुणा कर दीजिये; क्योंकि आपका करुणामय चरित्र, श्रीसनक-सनातन आदि ऋषियोंके द्वारा वर्णित है ॥२॥

[७१]
गीतम्

देव ! भवन्तं वन्दे ।
मन्मानस-मधुकरमर्पय निज-पद-पङ्कज-मकरन्दे ॥ध्रु०॥
यदपि समाधिषु विधिरपि पश्यति, न तव नखाग्रमरोचिम् ।
इदमिच्छामि निशम्य तवाच्युत !, तदपि कृपाद्भुतवीचिम् ॥
भक्तिरुदञ्चति यद्यपि माधव !, न त्वयि मम तिलमात्री ।
परमेश्वरता तदपि तवाधिक,–दुर्घटघटन–विधात्री ॥
अयमविलोलतयाद्य सनातन, कलिताद्भुत-रसभारम् ।
निवसतु नित्यमिहामृतनिन्दिनि, विन्दन् मधुरिमसारम् ॥

हे भगवान् श्रीकृष्ण ! मैं आपकी वन्दना करता हूं । कृपया मेरे मन-रूप भ्रमरको अपने चरणकमलोंके मकरन्दमें लगा लीजिये, अर्थात् उसको अपने चरणारविन्दोंका रस चखा दीजिये, जिससे वह अन्यत्र आसक्त न हो सके । यद्यपि ब्रह्मा भी समाधियोंमें तुम्हारे चरणनखोंके अग्रभाग-की एक किरणको भी नहीं देख पाते हैं, तो भी हे अच्युत ! तुम्हारी कृपाकी आश्चर्यमयी तरङ्गको सुनकर कि आपकी प्राप्ति केवल आपकी कृपासे ही साध्य है, मैं ऐसा चाहता हूं । हे माधव ! यद्यपि तुम्हारे श्री चरणोंके प्रति मेरी तिलमात्र भी भक्ति नहीं है, फिर भी तुम्हारी परमे-श्वरता तो असम्भवको भी संभव बनानेवाली है, उसीके द्वारा मेरा मनो-रथ पूरा कर दीजिये । हे सनातन ! तुम्हारे चरणारविन्द, अमृतका भी तिरस्कार करनेवाले हैं, अतः मेरा मनरूप–मधुकर तृष्णारहित होकर, निश्चलतापूर्वक तुम्हारे चरणारविन्दों में ही नित्यनिवास करता रहे, यही मेरी प्रार्थना है ।

—o—

[७२]

श्रीराधाकृपा कटाक्ष-स्तवराजः

मुनीन्द्र वृन्द-वन्दिते त्रिलोक-शोक-हारिणी
प्रसन्न-वक्त्र-पङ्कजे निकुञ्ज-भू-विलासिनि ।
व्रजेन्द्र-भानु-नन्दिनि व्रजेन्द्र-सूनु-सङ्गते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१॥

अशोक-वृक्ष-वल्लरी-वितान-मण्डप-स्थिते
प्रवालवाल-पल्लव प्रभाऽरुणांघ्रि कोमले ।
वराभय-स्फुरत्-करे प्रभूत-सम्पदालये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥२॥

अनङ्ग-रङ्ग-मङ्गल-प्रसङ्ग-भंगुरभ्रुवां
सविभ्रमं ससम्भ्रमं दृगन्त-बाण-पातनैः ।

भावार्थ– मुनीन्द्रवृन्द जिनके श्रीचरणकमलोंकी वन्दना करते हैं तथा जो तीनों लोकोंका शोक दूर करनेवाली है, स्मित हास्यसे प्रफुल्लित मुख-कमलवाली, निकुञ्ज भवनमें विलास करनेवाली, श्रीवृषभानु राजनन्दिनी, श्रीव्रजराजकुमारकी हृदयेश्वरी श्रीमती राधिके ! कब मुझे अपने कृपा-कटाक्षका पात्र बनाओगी ? ॥१॥

अशोक-वृक्षकके ऊपर चढ़ी हुई लताओंसे निर्मित "लता-मंदिरमें विराजमान, मूंगे तथा नवीन लाल-लाल पल्लवोंके समान अरुण कान्ति-युक्त कोमल चरणोंवाली, भक्तोंको अभीष्ट वरदान देनेवाले तथा अभय-दान देनेके लिये उत्सुक रहनेवाले कर-कमलोंवाली, अपार ऐश्वर्यकी आलय स्वामिनी श्रीमती राधिके ! मुझे कब अपने कृपा-कटाक्षका अधिकारी बनाओगी ? ॥२॥

प्रेम-क्रीड़ाके रंगमंचपर मङ्गलमय प्रसङ्गमें बांकी भृकुटी करके, आश्चय प्रकट-करते हुए सहसा कटाक्षरूपी बाणोंकी वर्षासे श्रीनन्दनन्दन-

निरन्तरं वशीकृत प्रतीति नन्दनन्दने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥३॥
तडित्-सुवर्ण-चम्पक-प्रदीप्त-गौर-विग्रहे
मुख-प्रभा-परास्त-कोटि-शारदेन्दुमण्डले ।
विचित्र-चित्र-संचरच्चकोर-शाव-लोचने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥४॥
मन्दोन्मदातियौवने प्रमोद-मान-मण्डिते
प्रियानुराग-रञ्जिते कला-विलास-पण्डिते ।
अनन्य-धन्य-कुञ्ज-राज्य-काम-केलि-कोविदे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥५॥
अशेष-हाव-भाव-धीर-हीरहार-भूषिते
प्रभूतशातकुम्भ-कुम्भ-कुम्भि-कुम्भ-सुस्तनि ।

को निरन्तर वशीभूत करनेवाली हे सर्वेश्वरी राधिके ! मुझे कब अपने कृपा-कटाक्षका पात्र बनाओगी ॥३॥

विद्युत, स्वर्ण तथा चम्पक-पुष्पके समान सुनहली कान्तिसे देदीप्यमान गोर-अंगोंवाली, अपने मुखारविन्दकी प्रभासे करोड़ों शरत्कालीन चन्द्रमाओंकी छटाको भी पराभूत करनेवाली क्षण-क्षणमें विचित्र-चित्रोंकी छटा दिखानेवाले चंचल-बाल-चकोरके सदृश चञ्चल नेत्रोंवाली हे श्रीमती राधिके ! मुझे कब अपने कृपा-कटाक्षका अधिकारी बनाओगी ? ॥४॥

अपने रूप-यौवनके मदसे प्रमत्त रहनेवाली, आनन्द भरे मानरूप सर्वोत्तम भूषणसे सर्वदा विभूषित रहनेवाली, प्रियतमके अनुराग में रंगी हुई, कला-विलासमें परम प्रवीण एवं अनन्य-धन्य निकुञ्ज-राज्यके प्रेम-कौतुक विद्याकी सर्वोत्तम विद्वान् श्रीमती राधिके ! मुझे अपने कृपाकटाक्ष का पात्र कब बनाओगी ? ॥५॥

सम्पूर्ण हाव-भावरूपी शृङ्गारों तथा धीरतारूपी हीरेके हारोंसे विभूषित अङ्गोंवाली, शुद्ध स्वर्णके कलसों और जयनन्दिनीके गण्डस्थलके

प्रशस्त-मन्द-हास्य-चूर्ण-पूर्ण-सौख्यसागरे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥६॥
मृणाल-वाल-वल्लरी तरङ्ग-रङ्ग-दोर्लते
लताग्र-लास्य-लोल-नील-लोचनावलोकने ।
ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञ मुग्ध-मोहनाश्रये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥७॥
सुवर्ण-मालिकाञ्चित-त्रिरेख-कम्बु-कण्ठगे
त्रिसूत्र-मङ्गलीगुण-त्रिरत्न-दीप्ति-दीधिति ।
सलोल-नीलकुन्तल प्रसून-गुच्छ-गुम्फिते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥८॥

समान मनोहर पयोधरों वाली, प्रशंसित मन्द मुस्कानसे परिपूर्ण, आनन्द सिन्धु सदृश श्रीमती राधिके ! क्या मुझे कभी अपनी कृपादृष्टिसे कृतार्थ करोगी ? ॥६॥

जलकी लहरोंसे हिलते हुए कमलके नवीन नालके समान जिनकी कोमल भुजाएं हैं, पवनके झोंकोंसे जैसे लताका एक अग्रभाग नाचता है, ऐसे चंचल नेत्र-नीलिमा झलकाते हुए जो अवलोकन करती हैं, ललचाने वाले, लुभाकर पीछे-पीछे फिरनेवाले, मिलनमें मनको हरनेवाले मुग्ध मनमोहनको आश्रय देनेवाली, हे वृषभानु किशोरी ! कब अपने कृपा-कटाक्ष द्वारा मुझे कृतार्थ करोगी ? ॥७॥

स्वर्णकी मालाओंसे विभूषित तथा तीन रेखाओंवाले शंखकी छटा सदृश सुन्दर कण्ठवाली तथा जिनके कण्ठमें मङ्गलमय त्रिसूत्र बंधा हुआ है, जिससे तीन रंगके रत्नोंका भूषण लटक रहा है, रत्नोंसे देदीप्यमान किरणें निकल रही हैं (यह मंगल-त्रिसूत्र, नव-वधूको गलेमें पहनाया जाता है, यह ब्रजकी प्राचीन प्रथा है। दक्षिण में अब भी यह प्रथा प्रचलित है) तथा दिव्य पुष्पोंके गुच्छोंसे गूथे हुए काले घुंघराले लहराते केशोंवाली हे सर्वेश्वरी श्रीराधे ! कब मुझे अपनी कृपादृष्टिसे अवलोकन कर अपने चरणकमलों के दर्शनका अधिकारी बनाओगी ? ॥८॥

नितम्ब–बिम्ब–लम्बमान–पुष्प–मेखलागुणे
प्रशस्त–रत्न–किङ्किणी–कलाप–मध्य मञ्जुले ।
करीन्द्र–शुण्ड–दण्डिका–वरोह–सौभगोरुके
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥९॥

अनेक–मन्त्रनाद–मञ्जु–नूपुरारवस्खलत्
समाज–राजहंस–वंश–निक्वणातिगौरवे ।
विलोल–हेम–वल्लरी विडम्बि–चारु–चङ्क्रमे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१०॥

अनन्त–कोटि–विष्णुलोक–नम्र–पद्मजार्चिते
हिमाद्रिजा–पुलोमजा–विरिंचजा–वरप्रदे ।
अपार–सिद्धि–ऋद्धि–दिग्ध–सत्पदांगुली–नखे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥११॥

जिनके कटि–प्रदेशमें मणिमय किङ्किणी सुशोभित है, जिसमें सोने-के फूल रत्नोंसे जड़े हुए लटक रहे हैं तथा उसकी प्रशंसनीय–झङ्कार अति-शय मनोहर है; गजेन्द्रकी सूंडके समान जिनकी जंघायें अत्यन्त सुन्दर हैं, ऐसी परम सुन्दरी श्रीराधिके ! मुझे कब अपने कृपा–कटाक्षका पात्र बनाओगी ? ॥९॥

अनेकों वेद–मंत्रोंकी सुमधुर झनकार करनेवाले स्वर्णमय नूपुर जिनके श्रीचरणोंमें ऐसे प्रतीत होते हैं, मानों मनोहर हंसोंकी पंक्ति कूंज रही हो, चलते समय अङ्गोंकी छबि ऐसी लगती है, मानो स्वर्णलता लहरा रही हो, ऐसी हे जगदीश्वरी श्रीराधे ! क्या कभी मैं आपके श्रीचरण–कमलोंकी दासी हो सकूंगा ? ॥१०॥

अनन्त कोटि वैकुण्ठोंकी स्वामिनी श्रीलक्ष्मीजी भी आपकी पूजा करती हैं तथा श्रीपार्वतीजी, इन्द्राणीजी और सरस्वतीजीने भी आपकी पूजाकर आपसे वरदान पाया है, आपके चरणकमलोंकी एक अंगुलीके नखका भी ध्यान करने मात्रसे अपार सिद्धियों का समूह बढ़ने लगता

मखेश्वरि क्रियेश्वरि स्वधेश्वरि सुरेश्वरि
त्रिवेद-भारतीश्वरि प्रमाण-शासनेश्वरि ।
रमेश्वरि क्षमेश्वरि प्रमोद काननेश्वरि
व्रजेश्वरि व्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तुते ॥१२॥

इतीममद्भुतं-स्तवं निशम्य भानुनन्दिनी
करोतु सन्ततं जनं कृपाकटाक्षभाजनम् ।
भवेत्तदैव-सञ्चित-त्रिरूप-कर्म-नाशनं
लभेत्तदा-व्रजेन्द्र-सूनु—मण्डल-प्रवेशनम् ॥१३॥

राकायां च सिताष्टम्यां दशम्यां च विशुद्धया ।
एकादश्यां त्रयोदश्यां यः पठेत्साधकः सुधीः ॥१४॥
यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति साधकः ।
राधाकृपाकटाक्षेण भक्तिः स्यात् प्रेमलक्षणा ॥१५॥

है; हे श्रीमती राधिके ! कब मुझे अपने कृपा-कटाक्षका पात्र बनाओगी

सब प्रकारके यज्ञोंकी आप स्वामिनी हैं, सम्पूर्ण क्रियाओंकी अधीश्वरी हैं, स्वधादेवीकी स्वामिनी हैं, सभी देवताओंकी अखिलेश्वरी हैं; ऋक्, साम, यजु—इन तीनों वेदोंकी वाणियोंकी स्वामिनी, प्रमाण शासन-शास्त्रकी स्वामिनी, श्रीरमादेवीकी अधीश्वरी, श्रीक्षमादेवीकी भी स्वामिनी, प्रमोद काननकी कुञ्जेश्वरी आप ही हैं; हे श्रीराधिके ! कब मुझे कृपाकर अपनी दासी बनाकर युगल-सेवामें अधिकार प्रदान करोगी ? हे व्रजेश्वरी, हे व्रजकी अधिष्ठात्री श्रीराधिके ! आपको मेरा बारम्बार प्रणाम है ।१२।

हे वृषभानुनन्दिनी ! मेरी इस विचित्र स्तुतिको सुनकर सर्वदाके लिये मुझे अपनी दया दृष्टिका अधिकारी बना लो । बस आपकी दया ही से तो मेरे प्रारब्ध, संचित और क्रियमाण—तीनों प्रकारके कर्मोंका नाश हो जायगा और उसी क्षण श्रीकृष्णचन्द्रको परमश्रेष्ठ सखियोंकी मण्डलीमें मञ्जरी-स्वरूपा दासीके रूपमें—उनकी नित्यलीला-विहारमें सदाके लिए प्रवेश हो जायेगा ॥१३॥

उरुदघ्ने नाभिदघ्ने हृद्दघ्ने कण्ठदघ्ने चं ।
राधाकुण्डजले स्थित्वा यः पठेत्साधकः शतम् ॥१६॥
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्यात् वाक्सामर्थ्यं ततो लभेत् ।
ऐश्वर्यं च लभेत्साक्षाद्दृशा पश्यति राधिकाम् ॥१७॥
तेन सा तत्क्षणादेव तुष्टा दत्ते महावरम् ।
येन पश्यन्ति नेत्राभ्यां तत्प्रियं श्यामसुन्दरम् ॥१८॥
नित्यलीला-प्रवेशं च ददाति हि व्रजाधिपः ।
अतः परतरं प्राप्यं वैष्णवानां न विद्यते ॥१९॥

(ध्यानम्)

श्यामां गोरोचनाभां स्फुरदसितपट प्राप्तिरम्यावगुण्ठां
रम्यां धन्यांस्व वेणीसुचिकुरनिकरालम्बपादांकिशोरीम् ।
तर्जन्यंगुष्ठयुक्तं हरिमुखकुहरे युञ्जतीं नागवल्ली-
पर्णं कर्णायताक्षीं त्रिभुवनमधुरां राधिकांभावयामि ॥२०॥

पूर्णिमाके दिन, शुक्लपक्ष की अष्टमी या दशमीको तथा दोनों पक्ष-की एकादशी और त्रयोदशीको, जो शुद्ध बुद्धिवाला भक्त इस स्तोत्रका प्रीतिपूर्वक पाठ करेगा, वह जो भावना करेगा वही प्राप्त होगा, अन्यथा निष्काम भावनासे पाठ करने पर श्रीराधाजीकी दयादृष्टिसे परा-भक्ति प्राप्त होगी ॥१४-१५॥

इस स्तोत्रसे श्रीराधा-कृष्ण युगलका साक्षात्कार होता है। उसकी विधि इस प्रकार है कि श्रीगोवर्द्धनके समीप श्रीराधाकुण्डके जलमें जंघाओं तक या नाभि पर्यन्त या छातीतक या कण्ठ तक जलमें खड़े होकर इस स्तोत्र का सौ बार पाठ करे। इस प्रकार कुछ दिनोंतक पाठ करने पर सम्पूर्ण मनोवांछित पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं। ऐश्वर्यकी प्राप्ति होती है। दर्शनार्थी भक्तको इन्हीं नेत्रोंसे साक्षात् श्रीराधाजीका दर्शन होता है। श्रीराधाजी प्रकट होकर प्रसन्नतापूर्वक महान् वरदान देती हैं (अथवा अपने चरणोंका महावर यावक भक्तके मस्तक पर लगा देती हैं)। इससे श्रीश्यामसुन्दर तत्काल ही प्रकट होकर नित्यलीलाओंमें प्रवेश प्रदान करते हैं। इससे बढ़कर वैष्णवोंके लिए कोई भी वस्तु नहीं है ॥१६-१९॥

[७३]

श्रीदामोदराष्टकम्

नमामीश्वरं सच्चिदानन्दरूपं,
लसत्कुण्डलं गोकुले भ्राजमानम् ।
यशोदाभियोलूखलाद्धावमानं,
परामृष्टमत्यं ततो द्रुत्य गोप्या ॥१॥

रुदन्तं मुहुर्नेत्रयुग्मं मृजन्तं,
कराम्भोज - युग्मेन सातङ्कनेत्रम् ।
मुहुःश्वासकम्प – त्रिरेखाङ्ककण्ठ –
स्थितग्रैव–दामोदरं भक्तिबद्धम् ॥२॥

जिनके कपोलोंपर दोदुल्यमान मकराकृत-कुण्डल क्रीड़ा कर रहे हैं, जो गोकुल नामक अप्राकृत चिन्मय धाममें परम शोभायमान हैं, जो दधिभाण्ड फोड़ने के कारण माँ यशोदाके भयसे भीत होकर ओखल परसे कूदकर अत्यन्त वेगसे दौड़ रहे हैं और जिन्हें माँ यशोदाने उनसे भी अधिक वेगपूर्वक दौड़कर पकड़ लिया है, ऐसे उन सच्चिदानन्द-स्वरूप सर्वेश्वर श्रीकृष्ण की मैं वन्दना करता हूं ॥१॥

जननीके हाथमें लठियाको देखकर मार खानेके भयसे डरकर जो रोते-रोते बारम्बार अपनी दोनों आँखोंको अपने हस्तकमलसे मसल रहे हैं, जिनके दोनों नेत्र भयसे अत्यन्त विह्वल हैं, रोदन के आवेग से बारम्बार श्वास लेने के कारण त्रिरेखायुक्त कण्ठमें पड़ी हुई मोतियोंकी माला आदि कण्ठभूषण कम्पित हो रहे हैं, और जिनका उदर (माँ यशोदा की वात्सल्य-भक्ति के द्वारा) रस्सी से बँधा हुआ है, उन सच्चिदानन्द-स्वरूप दामोदर की मैं वन्दना करता हूं ॥२॥

इतीदृक् स्वलीलाभिरानन्द कुण्डे,
स्वघोषं निमज्जन्तमाख्यापयन्तम् ।
तदीयेशितज्ञेषु भक्तैर्जितत्वं,
पुनः प्रेमतस्तं शतावृत्ति वन्दे ॥३॥

वरं देव ! मोक्षं न मोक्षावधिं वा,
न चान्यं वृणेऽहं वरेशादपीह ।
इदन्ते वपुर्नाथ ! गोपालबालं,
सदा मे मनस्याविरास्तां किमन्यैः ॥४॥

इदन्ते मुखाम्भोजमत्यन्तनीलै-
र्वृतं कुन्तलैः स्निग्ध-रक्तैश्च गोप्या ।
मुहुश्चुम्बितं बिम्बरक्ताधरं मे,
मनस्याविरास्तामलं लक्षलाभैः ॥५॥

जो इस प्रकार दामबन्धनादि-रूप बाल्य-लीलाओंके द्वारा गोकुलवासियों को आनन्द-सरोवरमें नित्यकाल सराबोर करते रहते हैं, और जो ऐश्वर्यपूर्ण ज्ञानी भक्तोंके निकट "मैं अपने ऐश्वर्यहीन प्रेमी भक्तोंद्वारा जीत लिया गया हूं"—ऐसा भाव प्रकाश करते हैं, उन दामोदर श्रीकृष्णकी मैं प्रेमपूर्वक बारम्बार वन्दना करता हूं ॥३॥

हे देव ! आप सब प्रकारके वर देनेमें पूर्ण समर्थ हैं। तो भी मैं आपसे चतुर्थपुरुषार्थरूप मोक्ष या मोक्षकी चरम सीमारूप श्रीवैकुण्ठ आदि लोक भी नहीं चाहता। और न मैं श्रवण और कीर्त्तन आदि नवधा भक्तिद्वारा प्राप्त किया जानेवाला कोई दूसरा वरदान ही आपसे माँगता हूं। हे नाथ ! मैं तो आपसे इतनी ही कृपाकी भीख माँगता हूं कि आपका यह बालगोपालरूप मेरे हृदयमें नित्यकाल विराजमान रहे। मुझे और दूसरे वरदान से कोई प्रयोजन नहीं है ॥४॥

नमो देव दामोदरानन्त विष्णो !,
प्रसीद प्रभो ! दुःखजालाब्धिमग्नम् ।
कृपादृष्टि-वृष्ट्यातिदीनं बतानु,
गृहाणेश ! मामज्ञमेध्यक्षिदृश्यः ॥६॥

कुबेरात्मजौ बद्धमूर्त्यैव यद्वत्,
त्वया मोचितौ भक्तिभाजौ कृतौ च ।
तथा प्रेमभक्तिं स्वकां मे प्रयच्छ,
न मोक्षे ग्रहो मेऽस्ति दामोदरेह ॥७॥

हे देव ! अत्यन्त श्यामलवर्ण और कुछ-कुछ लालिमा लिए हुए चिकने और घुँघराले बालोंसे घिरा हुआ तथा माँ यशोदाके द्वारा बारम्बार चुम्बित आपका मुखकमल और पके हुए बिम्बफलकी भांति अरुण अधर-पल्लव मेरे हृदयमें सर्वदा विराजमान रहे । मुझे लाखों प्रकारके दूसरे लाभों की आवश्यकता नहीं है ॥५॥

हे देव ! हे (भक्तवत्सल) दामोदर ! हे (अचिन्त्य शक्तियुक्त) अनन्त ! हे(सर्वव्यापक) विष्णो ! हे (मेरे ईश्वर) प्रभो ! हे (परम स्वतन्त्र) ईश ! मुझपर प्रसन्न होवें । मैं दुःखसमूहरूप समुद्रमें डूबा जा रहा हूं । अतएव आप अपनी कृपादृष्टिरूप अमृत की वर्षाकर मुझ अत्यन्त दीन-हीन शरणागतपर अनुग्रह कीजिए एवं मेरे नेत्रोंके सामने साक्षात् रूपसे दर्शन दीजिए ॥६॥

हे दामोदर ! जिस प्रकार आपने दामोदर रूपसे ओखल में बँधे रहकर भी (नलकूबर और मणिग्रीव नामक) कुबेर के दोनों पुत्रोंका (नारदके शापसे प्राप्त) वृक्षयोनिसे उद्धार कर उन्हें परम प्रयोजनरूप अपनी भक्ति भी प्रदान की थी, उसी प्रकार मुझे भी आप अपनी प्रेम-भक्ति प्रदान कीजिए—यही मेरा एकमात्र आग्रह है । किसी भी अन्य प्रकार के मोक्ष के लिए मेरा तनिक भी आग्रह नहीं है ॥७॥

नमस्तेऽस्तु दाम्ने स्फुरद्दीप्तिधाम्ने,
त्वदीयोदरायाथ विश्वस्य धाम्ने ।
नमो राधिकायै त्वदीय-प्रियायै,
नमोऽनन्तलीलाय देवाय तुभ्यम् ॥८॥

हे दामोदर ! आपके उदरको बाँधनेवाली महान् रज्जुको प्रणाम है, निखिल ब्रह्मतेज के आश्रय और सम्पूर्ण विश्वके आधारस्वरूप आपके उदरको नमस्कार है। आपकी प्रियतमा श्रीराधारानीके चरणोंमें मेरा बारम्बार प्रणाम है और आपके अलौकिक लीला-विलासको भी मेरा सैकड़ों बार प्रणाम है ॥८॥

—o—

श्रीकृष्ण ! गोपाल हरे ! मुकुन्द !,गोविन्द ! हे नन्दकिशोर ! कृष्ण! ।
हे श्रीयशोदातनय ! प्रसीद, श्रीबल्लवीजीवन ! राधिकेश ! ॥

समाप्त

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति द्वारा हिन्दी में प्रकाशित

जैव धर्म

(जीव का धर्म)

श्रीश्रील ठाकुर भक्तिविनोद विरचित

अनुवादक
परिव्राजकाचार्य श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण महाराज

गागर में सागर की भांति सम्पूर्ण भारतीय शास्त्रों का
सारयुक्त इस ग्रन्थ के बंगला में अब तक 25
संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

उत्तम जिल्द | 800 पृष्ठ | भिक्षा 20 रु०

पता :
श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ
मथुरा (उ० प्र०)

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ-तालिका

हिन्दी-संस्करण

	भिक्षा
1. जैव धर्म (जीव का धर्म)	20)
2. श्रीचैतन्यमहाप्रभु की शिक्षा	3)
3. श्रीचैतन्य महाप्रभु के स्वयं भगवत्ता प्रतिपादक कतिपय शास्त्रीय प्रमाण	2)
4. अर्चन दीपिका	1)50
5. भक्तितत्व विवेक	2)
6. वैष्णव सिद्धान्तमाला	1)
7. शिक्षाष्टक	3)
8. श्रीगौड़ीय गीतिगुच्छ	2)50

बंगला-संस्करण

1. जैव धर्म
2. सिद्धान्तरत्नम्
3. श्रीदामोदराष्टक
4. मायावादेर जीवनी
5. सांख्यवाणी
6. शरणागति
7. श्रीमन्महाप्रभुर शिक्षा
8. श्रीभक्ति प्रबन्धावली
9. प्रेम प्रदीप
10. श्रीनवद्वीपधाम माहात्म्य
11. विजन ग्राम ओ संन्यासी
12. श्रीनवद्वीप-भाव तरङ्ग
13. श्रीनवद्वीप-शतकम्
14. श्रीनवद्वीपधाम-परिक्रमा
15. श्रीगौड़ीय-गीतिगुच्छ
16. श्रीरूपानुग-भजन-सम्पत्
17. श्रीमद्भगवद्गीता
18. अर्चन-दीपिका
19. श्रीगौड़ीय-पत्रिका (मासिक)
20. Shri Chaitanya Mahaprabhu his life and precepts